Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

बِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم   نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡم   وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

अल्लाह तआला का आदेश

وَلَقَدۡ صَرَّفۡنَا لِلنَّاسِ
فِیۡ ہٰذَا الۡقُرۡاٰنِ مِنۡ کُلِّ مَثَلٍ
فَاَبٰۤی اَکۡثَرُ النَّاسِ اِلَّا کُفُوۡرًا

(बनी ईसराईल : 90)

अनुवाद: वास्तव में, हमने इस क़ुरआन में लोगों के लिए हर प्रकार की मिसालें खूब फैर फैर कर वर्णन कर दी हैं।अतः अधिकांश मनुष्यों ने कृतघ्न होकर ही इन्कार कर दिया।

वर्ष- 8
अंक-37

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

27 सफ़र 1445 हिज्री कमरी, 14 तबूक 1402 हिज्री शम्सी, 14 सितंबर 2023 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रुहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

ख़ुत्बः जुमअः

इस जलसे में शामिल होने का हमारा एक उद्देश्य है और वह उद्देश्य है
अपनी रुहानी और इल्मी हालत को बेहतर करना, अख़लाक़ी हालत को बेहतर करना, अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत अपने दिल में पैदा करना

अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से मैं उम्मीद रखता हूँ कि बड़े अहसन रंग में हमारे स्वयंसेवकअपने इंतेज़ामात सँभाल सकेंगे

यह जो फ़िक्र है कि एक वक़्फ़े के बाद बहुत ज़्यादा वसीअ पैमाने पर जलसा आयोजित हो रहा है और कहीं कोई इंतेज़ामी कमियां ज़ाहिर न हों
अल्लाह तआला भी इन शा अल्लाह तआला इन फ़िकरों को, इंतेज़ामिया की इन फ़िकरों को दूर फ़र्मा देगा इस शर्त पर कि हम अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को जज़्ब करने की तरफ़ हर वक़्त ध्यान देते रहें

हमारे काम हमारी किसी होशयारी या तजुर्बे से अंजाम नहीं पाते बल्कि विशेषता अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से अंजाम पाते हैं

मैं स्वयंसेवकों से कहता हूँ कि जिस जज़्बे से सबने अपने आपको ख़िदमत के लिए पेश किया है उस जज़्बे को रखते हुए
जितने दिन भी डयूटियाँ हैं उन्हें सरअंजाम दें और जहां मेहमानों की ख़िदमत करने का हक़ अदा करें वहां यह बात भी न भूलें कि हमने अल्लाह तआला की इबादत का भी हक़ अदा करना है, अपनी नमाज़ों की भी हिफ़ाज़त करनी है और इस माहौल से हर लम्हा फ़ायदा उठाते हुए अपनी ज़ात को भी पाक बनाए रखने की कोशिश करनी है

मुख़्तलिफ़ मर्कज़ी विभागों में उदाहरणतः मख़ज़न-ए-तसावीर है, रिव्यू आफ़ रिलीजिंज़ है, तब्लीग़ इत्यादि की मारकी है, आर्काइव की नुमाइश है उन्हें देखें और अपना दीनी और तारीख़ी इल्म भी बढ़ाएं

अगर अख़लाक़ नहीं तो कुछ भी नहीं, केवल कारकुनान की ख़ुशअख़लाक़ी से माहौल पुरअमन नहीं हो सकता बल्कि
तमाम हाज़ेरीन को ख़ुशअख़लाक़ी का मुज़ाहरा करना चाहिए, औरतें भी इस बात का ख़्याल रखें और मर्द भी इस बात का ख़्याल रखें

हर एक को इस सोच को अपने सामने रखना चाहिए कि हमने अपने पर अपने भाई को तर्जीह देनी है, अगर यह सोच हम में से हर एक में पैदा हो जाए और इस सोच के साथ पैदा हो जाए कि मैंने दूसरे का हक़ भी अल्लाह तआला की रज़ा को हासिल करने के लिए अदा करना है तो ऐसा समाज फिर प्यार और मुहब्बत का समाज बन जाता है

अल्लाह तआला करे कि ये तीन दिन सिर्फ हमारे तराने पढ़ने और नज़्में पढ़ने के और प्यार-ओ-मुहब्बत के गुणगान के दिन न हों बल्कि इन तीन दिनों की तर्बीयत से वे जाग लगे जो मुआशरे में प्यार-ओ-मुहब्बत की एक ऐसी फ़िज़ा क़ायम करने वाली हो जो हक़ीक़ी और इस्लामी मुआशरे का तुर्रा-ए-इम्तियाज़ है

मेज़बान का यह फ़र्ज़ है जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि जहां तक संभव हो
मेहमान को आराम पहुंचाए और मेहमानों को भी मामूली तकलीफों को बर्दाशत करने का बेहतरीन अज्र अल्लाह अता फ़रमाए

आज दस मुहर्रम भी है, दुरूद शरीफ़ पढ़ना चाहिए और इस सोच के साथ पढ़ना चाहिए कि

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

अल्लाह तआला आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुक़ाम व मर्तबा को बुलंद करता चला जाए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पैग़ाम को सफ़लता और ग़लबा अता फ़रमाए, आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शरियत को बक़ा और अज़मत अता फ़रमाए, आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उम्मत के हक़ में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दुआओं से हम फ़ैज़ पाने वाले हों और अल्लाह तआला इस उम्मत को हर किस्म के बिगाड़ से पाक कर दे

सैक्योरिटी के लिहाज़ से भी मर्दाना और ज़नाना जल्सा गाह में हर शामिल होने वाले को अपने माहौल पर नज़र रखनी चाहिए

इन दिनों में अल्लाह की इबादत के साथ विशेषता दुरूद की तरफ़ भी बहुत तवज्जा रखें

जलसा सालाना के कारकुनान और मेहमानों को कीमती उपदेश

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 28 जुलाई 2023 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

आज अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से जमाअत अहमदिया यू.के का जलसा सालाना शुरू हो रहा है।

अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से अब तो तक़रीबन चार दहाईयां गुज़र गई हैं यहां ख़िलाफ़त की मौजूदगी में जलसा सालाना आयोजित होते हुए। शुरू में वसीअ इंतेज़ामात की वजह से यहां की जमाअत को बहुत कुछ सिखाने की ज़रूरत थी जिस के लिए हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे रहमहुल्लाह तआला ने ज़ाती दिलचस्पी से भी राहनुमाई फ़रमाई और रब्वाह से भी अनुभवी लोगों को यहां बुला कर काम सिखाया जिन में चौधरी हमीदुल्लाह साहिब अफ़्सर जलसा सालाना भी थे, उन्होंने बड़ी मदद की 1985 ई. में यहां जो पहला जलसा हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे की मौजूदगी में हुआ, इस से पहले एक जल्सा 84 ई. में भी हुआ था लेकिन बहुत छोटा था। जो बाक़ायदा जलसा हुआ 1985 ई. में हुआ।

इस में शायद पाँच हज़ार लोग शामिल हुए और इस की भी इंतेज़ामिया को बड़ी फ़िक्र थी। हर एक परेशान था कि किस तरह सम्भालेंगे। अब अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से सिर्फ ख़ुद्दामुल अहमदिया यू.के के इजतेमा में या लजना इमाइल्लाह के इजतेमा में इस से कहीं ज़्यादा हाज़िरी होती है और बड़े अहसन तरीक़े से ये ज़ेली तंज़ीमें भी अपना इंतेज़ाम सँभाल लेती हैं। अतः इस लिहाज़ से यू.के की जमाअत बहुत तजरबाकार हो चुकी है कि इंतेज़ामात सँभाल सके।

इस मर्तबा क्योंकि तीन चार साल के वक़्फ़े के बाद मुकम्मल वसीअ पैमाने पर जलसा आयोजित हो रहा है इसलिए इंतेज़ामिया को फिर फ़िक्र है कि चालीस हज़ार से ऊपर मुतवक़्क़े हाज़िरी को हम अहसन रंग में सँभाल भी सकेंगे कि नहीं। लेकिन अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से मैं उम्मीद रखता हूँ कि बड़े अहसन रंग में हमारे कारकुन अपने इंतेज़ामात सँभाल सकेंगे।

मा शा अल्लाह अब तो यहां के रहने वाले लोग बल्कि यहां पैदा होने वाले और पलने बढ़ने वाले बच्चे भी जो अब जवान हो चुके हैं या उस उम्र को पहुंच चुके हैं जहां होश-ओ-हवास से काम सरअंजाम दे सकें। इतने अनुभवी हैं कि अपने काम अहसन रंग में निभा सकें।

पिछले इतवार मैं ने इस वक़्त तक के क़ायम शुदा इंतेज़ामात का जायज़ा भी लिया था और अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से हर जगह हर विभाग में मैं ने कारकुनान को बड़ा मुस्तइद और अपना काम जानने वाला पाया और अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से जो फ़िक्रें थीं वह दूर भी हुईं।

यह जो फ़िक्र है कि एक वक़्फ़े के बाद बहुत ज़्यादा वसीअ पैमाने पर जलसा आयोजित हो रहा है और कहीं कोई इंतेज़ामी कमियां ज़ाहिर ना हों, अल्लाह तआला इन फ़िकरों को, इंतेज़ामिया की इन फ़िकरों को भी इन शा अल्लाह तआला दूर फ़र्मा देगा बशर्ति कि हम अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को जज़्ब करने की तरफ़ हर वक़्त मुतवज्जा रहें। हमारे काम हमारी किसी होशयारी या तजुर्बे से अंजाम नहीं पाते बल्कि विशेषता अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से अंजाम पाते हैं।

पिछले ख़ुत्बे में इस के लिए मैंने कारकुनान को मुख़्तसेरन यह कहा भी था कि अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तालीम पर अमल करते हुए मेहनत, आला अख़्लाक़ और दुआओं से अल्लाह तआला की मदद मांगते हुए हर कारकुन और हर निगरान को अपना काम करना चाहिए और जब यह होगा तो फिर अल्लाह तआला भी बरकत अता फ़रमाएगा। हमने बेलौस हो कर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमानों की ख़िदमत के लिए अपने आपको पेश किया है जो विशेषता दीनी उद्देश्य से यहां जमा हुए हैं। अतः दुबारा मैं कारकुनों से कहता हूँ कि जिस जज़्बे से सबने अपने आपको ख़िदमत के लिए पेश किया है उस जज़्बे को क़ायम रखते हुए जितने दिन भी डयूटियाँ हैं उन्हें सरअंजाम दें और जहां मेहमानों की ख़िदमत करने का हक़ अदा करें वहां यह बात भी न भूलें कि हमने अल्लाह तआला की इबादत का भी हक़ अदा करना है, अपनी नमाज़ों की भी हिफ़ाज़त करनी है और इस माहौल से हर लम्हा फ़ायदा उठाते हुए अपनी ज़ात को भी पाक बनाए रखने की कोशिश करनी है।

सिर्फ डयूटियों का हक़ अदा कर के यह नहीं समझना चाहिए कि हमारा जो उद्देश्य था हमने पूरा कर लिया। बग़ैर इबादत के हमारा उद्देश्य पूरा नहीं हो सकता। अतः बच्चे जवान मर्द औरतें जो डयूटी देने वाले हैं इस हक़ की अदायगी का भी ख़्याल रखें

इस के बाद आज मैं चंद बातें जलसा पर आए हुए मेहमानों के लिए भी कहना चाहूँगा। हर शामिल जलसा को इस बात को हमेशा सामने रखना चाहिए कि यह न समझें कि ये बातें जो मैं कहने लगा हूँ यह रिवायतन कह रहा हूँ और मैंने कह दिया और आपने सुन लिया। बस इतना काफ़ी है। नहीं। बल्कि इस पर अमल करने की कोशिश करनी है।

सबसे पहली और अहम बात तो यह है कि सब लोग जो यहां जलसा में शामिल होने के लिए आए हैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इस बात को हमेशा याद रखें कि यह जलसा कोई दुनियावी मेला नहीं है।

(उद्धृत शहादतुल-क़ुरआन, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 6 पृष्ठ 395)

इस जलसे में शामिल होने का हमारा एक उद्देश्य है और वह उद्देश्य है अपनी रुहानी और इलमी हालत को बेहतर करना। अख़्लाक़ी हालत को बेहतर करना। अल्लाह तआला और उस के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत अपने दिल में पैदा करना।

अतः जब ये सोच होगी तो फिर दुनियावी बातों की तरफ़ तवज्जा नहीं रहेगी और जब दुनियावी बातों की तरफ़ तवज्जा नहीं रहेगी तो फिर जलसे के कुछ इंतेज़ामात जिनमें अगर कमज़ोरी भी होगी तो मेहमान उसे महसूस नहीं करेंगे

शेष पृष्ठ 08 पर

ख़ुत्बः जुमअः

अल्लाह तआला करे कि इस जलसे के ऐसे परिणाम हूँ जो अहमदियों की ज़िंदगियों को भी हमेशा के लिए अल्लाह तआला से जोड़ने वाले हों, उनके ईमान और ईक़ान में इज़ाफ़ा हो और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के आने के उद्देश्य को पूरा करने वाले हों

अल्लाह तआला तो हमारी कमज़ोरियों से सिर्फ-ए-नज़र फ़रमाते हुए इतना ज़्यादा और ऐसे ऐसे माध्यम और तरीक़े से हमें नवाज़ता है कि हम कभी भी उस की शुक्रगुज़ारी का हक़ अदा नहीं कर सकते

शुक्रगुज़ारी हमारा काम है, अल्लाह तआला की नेअमतों पर उसके आगे झुकते चले जाना हमारा काम है और जब तक हम अपना यह फ़र्ज़ अदा करते चले जाएंगे, हर सफ़लता को अल्लाह तआला की रहमत और फ़ज़्ल समझते हुए काम करते रहेंगे हमारे क़दम इन शा अल्लाह तआला आगे रहेंगें

मैं कारकुनों का शुक्रिया भी अदा करना चाहता हूँ .. अल्लाह तआला इन सबको प्रतिफल प्रदान करे। सबसे बढ़कर एम.टी.ए. का उसने इस दफ़ा दुनिया में नए अंदाज़ में जलसे को दुनिया से जोड़ा है

ख़लीफ़तुल मसीह ने तो अल्लाह और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बातें सुनाईं और कहा उनको सुनो और उनकी पैरवी करो (नुमाइंदा वज़ारत मज़हबी उमूर, हैटी)

आज समसस्त पृथ्वी पर हक़ीक़ी भाई चारे की जीती-जागती तस्वीर जमाअत अहमदिया में नज़र आती है जहां सब मुस्कुराते चेहरे के साथ बग़ैर रंग-ओ-नसल की तमीज़ के एक दूसरे के साथ ऐसे मिल रहे हैं जैसे सदियों से एक दूसरे को जानते हों (मिनिस्टर आफ़ गेम्बया)

सबसे ज़्यादा अहम चीज़ जो मैं ने जलसा सालाना में देखी वह नमाज़ थी (मारकोर् सपनटी, इटली)

पूरी दियानतदारी से यह एक बात कह रहा हूँ कि जो नज़्म-ओ-ज़ब्त मैंने जलसे पर देखा है वह आज से पहले कभी नहीं देखा। अहमदियों का ख़लीफ़तुल मसीह से ऐसा प्यार है जो शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता इस जलसे में जो ख़ास बात मैंने देखी है वह क़ुर्बानी भावना है (गवर्नर कोलडा रीजन सेनेगाल)

जिस बात ने मुझे सबसे ज़्यादा प्रभावित किया है वह जमाअत का इत्तिहाद और बाहमी मुहब्बत है उनके ख़्याल में हमारी जमाअत के जलसा की सफ़लता का राज़ हमारी यक जहती है जो कि ख़लीफ़ा वक़्त के वजूद के माध्यम से क़ायम है (डाक्टर नेस्तर सोतो, चली)

आलमी बैअत का तरीक़ हमारी इबादत से मिलता-जुलता है लेकिन मैं ने अपनी इबादत में कभी ऐसी रूहानियत नहीं महसूस की थी जैसे मैंने आलमी बैअत के दौरान की थी Aly Bear वायस चीफ़ एंड जिन्स कम्यूनिटी, कैनेडा

दुनिया-भर से जलसा सालाना बर्तानिया 2023 ई. में शामिल होने वाले अहमदी और ग़ैर अज़ जमात मेहमानों के तास्सुरात तथा वसीअ पैमाने पर जलसा सालाना की कवरेज

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 04 अगस्त 2023 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ. أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ. اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ. اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ. اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

अल्हम्दुलिल्लाह, अल्लाह के फ़ज़्ल से से, अहमदिया जमाअत यू.के जलसा सालाना पिछले शुक्रवार से रविवार तक सफलतापूर्वक आयोजित किया गया।

अंत पर पहुंचा और बावजूद मौसम की वक़्तन फ़ौक़ता खराबी के अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से उमूमी तौर पर हर लिहाज़ से हर इंतेज़ाम उमूमन बग़ैर किसी बड़ी परेशानी के चलता रहा और फिर इस वर्ष हाज़िरी भी पिछले वर्ष की निसबत बहुत ज़्यादा थी।

इस पर हम जितना भी अल्लाह तआला का शुक्र अदा करें कम है कि उसने हमारे जलसे को बरकतों से बे-इंतिहा भरा और उसे हर एक ने महसूस किया चाहे वह अहमदी मेहमान थे या ग़ैर अज़ जमात मेहमान थे जो मुख़्तलिफ़ देशों से आए हुए थे। हम तो कमज़ोर हैं। अल्लाह तआला के फ़ज़्लों से ही हमारे काम होते हैं और अल्लाह तआला के फ़ज़्लों की बारिश जमाअत पर इस तरह होती है जिसका शुमार ही मुम्किन नहीं। हम तो अल्लाह तआला की इस बात का हमेशा और हर वक़्त मुशाहिदा करते हैं कि وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ۔ اِنَّ اللّٰهَ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (अल् नहल : 19) कि अगर तुम अल्लाह तआला की नेअमतों का शुमार करना चाहो तो उसे अहाते में न ला सकोगे यक़ीनन अल्लाह तआला बहुत बख़्शने वाला और बार-बार रहम करने वाला है।

अतः अल्लाह तआला तो हमारी कमज़ोरियों से सिर्फ-ए-नज़र फ़रमाते हुए इतना ज़्यादा और ऐसे ऐसे ज़राए और तरीक़े से हमें नवाज़ता है कि हम कभी भी इस की शुक्रगुज़ारी का हक़ अदा नहीं कर सकते।

लेकिन हमें अल्लाह तआला का यह हुक्म भी है कि तुम उस का शुक्र अदा करते चले जाओ और जब तुम अल्लाह तआला का शुक्र अदा करते चले जाओगे तो अल्लाह तआला तुम्हें और भी नवाज़ता चला जाएगा।

शुक्रगुज़ारी हमारा काम है, अल्लाह तआला की नेअमतों पर उसके आगे झुकते चले जाना हमारा काम है और जब तक हम अपना यह फ़र्ज़ अदा करते चले जाऐंगे, हर सफ़लता को अल्लाह तआला की रहमत और फ़ज़्ल समझते हुए काम करते रहेंगे हमारे क़दम इन शा अल्लाह तआला आगे बढ़ते रहेंगे।

अतः इस जलसे की सफ़लता की सबसे पहली शुक्रगुज़ारी तो हमें अल्लाह

तआला की करनी चाहिए और जो इंतेज़ामी लिहाज़ से कमज़ोरियाँ रह गई हैं उस के लिए भी उस से बख़शिश तलब करनी चाहिए। इसी तरह शामिल होने वालों को भी अल्लाह तआला का शुक्रगुज़ार होना चाहिए कि उसने हमें अवसर दिया और हम जलसे में शामिल हो कर अपनी रुहानी और इलमी प्यास बुझाते रहे। उमूमी तौर पर सब काम आसान हुए बावजूद इस ख़ौफ़ के कि कोविड की बीमारी अभी पूरे तौर पर ख़त्म नहीं हुई, उमूमी तौर पर इतने बड़े मजमा के बावजूद अल्लाह तआला ने हिफ़ाज़त में रखा। अल्लाह तआला बाद में भी सबको अपनी हिफ़ाज़त में रखे। बाअज़ लोगों को जलसा के बाद फ़ौरी तौर पर भी नहीं बल्कि जलसे के दो तीन दिन गुज़रने के बाद इस बीमारी का हमला हुआ है। अल्लाह तआला उनको सेहत-ओ-सलामती से नवाज़े। बहुत कम ऐसे लोग हैं जो मेरे इलम में आए हैं और अब जो इस वबा से बीमार हो रहे हैं वह मेरे ख़्याल में तो जलसे का असर नहीं है बल्कि उमूमी तौर पर हुकूमत की तरफ़ से यह ऐलान है कि बाअज़ जगह केसेज़ बढ़ रहे हैं लेकिन अब यह इसी तरह है जिस तरह दूसरी बिमारीयां बढ़ती और कम होती रहती हैं। बहरहाल अल्लाह तआला हर मरीज़ को शिफ़ा फ़रमाए। अब मैं कारकुनों का शुक्रिया भी अदा करना चाहता हूँ।

इस दफ़ा उमूमन सबने बहुत आला रंग में अपने फ़रायज़ अदा किए और ग़ैरमामूली तौर पर मुस्कुराते हुए जैसा कि मैं ने शुरू में उनको कहा था तलक़ीन की थी अपनी डयूटियाँ सरअंजाम दें।

अल्लाह तआला इन सबको जज़ा दे।

हर विभाग के कारकुन की अपने शोबे के काम को सरअंजाम देने में इस दफ़ा ख़ासतौर पर महारत नज़र आ रही थी, लजना की तरफ़ भी, मर्दों की तरफ़ भी। हर साल लजना की तरफ़ से खाना खिलाने और खाने की दस्तयाबी के बारे में शिकायात होती थीं लेकिन इस दफ़ा यह शिकायत न होने के बराबर है और जो खाने की मार की और दूसरे ज़रूरी इंतेज़ामात के लिए इस दफ़ा जगह बदल कर एक हिस्से में ही लजना को तमाम सहूलयात मुहय्या की गई थीं उसको भी उमूमी तौर पर ख़वातीन ने पसंद किया है। अगर कोई कमी रह गई है तो वह इन शा अल्लाह तआला आइन्दा दूर करने की कोशिश होगी।

इसी तरह ट्रैफ़िक का विभाग है। खाना पकाने का विभाग है। रोटी प्लांट है। सैक्योरिटी है। सफ़ाई का काम है।

फिरसबसे बढ़कर एम.टी.ए कि उसने इस दफ़ा दुनिया में नए अंदाज़ में जलसे को दुनिया से जोड़ा है।

बहरहाल तमाम विभागों में जिनके मैंने नाम लिए या नहीं लिए मर्दों और औरतों ने बहुत मेहनत से अपने फ़रायज़ सरअंजाम दिए। अतः इन सब का मैं शुक्रिया भी अदा करता हूँ।

आए हुए ग़ैर मेहमानों ने भी सब कारकुनों की मेहनत और ख़ुशअख़लाक़ी को देखकर ग़ैरमामूली हैरत का इज़हार किया और यह एक ख़ामोश और अमली नमूना ऐसा था जो तब्लीग़ का ज़रीया बनता है जो हमारे कारकुनों ने की है। अल्लाह तआला इन सबको बेहतरीन जज़ा दे।

विभाग जलसा सालाना को सिर्फ़ में एक बात की तरफ़ तवज्जा दिलाना चाहता हूँ कि पानी जलसा ख़त्म होते ही फ़ौरन बंद कर देते हैं और ग़ुसल ख़ानों में पानी मुहय्या नहीं होता वह कम से कम उनको 12 घंटे तक जारी रखना चाहिए। इस के इलावा उमूमी तौर पर इंतेज़ाम बेहतर थे।

ग़ैर जो बाहर से मुख़्तलिफ़ देशों से आए हुए थे उन में ग़ैर मुस्लिम भी थे उनके एहसासात क्या थे। जलसे के इंतिज़ाम और जलसे को देखकर किस तरह वह प्रभावित हुए इसके चंद तबसरे पेश कर देता हूँ, सारे तो मुम्किन नहीं प्रोफ़ैसर डाक्टर जियालो झां (Djialo Jean) बुर्कीना फासो के बहुत मारूफ़ आई स्पैशलिस्ट हैं, मैडीकल यूनीवर्सिटी में प्रोफ़ैसर हैं और आर्मी में हाज़िर सर्विस कर्नल हैं। हमारे आई इंस्टीटियूट में भी आते रहते हैं। उन्होंने पहली बार शिरकत की तौफ़ीक़ पाई। कहते हैं मैंने पहली दफ़ा जलसे में शिरकत की। सबसे जिस चीज़ ने मुझे बहुत प्रभावित किया है हज़ारों अफ़राद एक मुशतर्का उद्देश्य के लिए एक मुक़ाम पर जमा होना हैं, एक मज़हबी लीडर के गर्द जमा हैं। सब के सब मुत्तहिद हैं, सब का उद्देश्य एक है।

फिर ग़ैरमामूली इंतेज़ामात कर लेना और मुख़्तलिफ़ स्वभाव के लोगों का एक स्थान पर इकट्ठे होना हैरानकुन है। मैंने उन लोगों में घुल मिलकर देखा पता करने के लिए कि वाक़ई हक़ीक़त भी है कि सिर्फ़ बनावट है लेकिन मुझे किसी एक फ़र्द के चेहरे पर भी बेज़ारी नज़र नहीं आई।

मुख़्तलिफ़ इलाक़ों, क़ौमों और मुल्कों के मुतफ़र्रिक़ विभागों से मुंसलिक अलग अलग मुआशरती वर्गों से संबंध रखने वाले लोगों का एक उद्देश्य के लिए एक मुक़ाम पर एक हाथ पर इकट्ठे हो जाना ग़ैरमामूली वाक़िया है। अतः अहमदी जलसे मे शामिल होने वाले इस तरह ग़ैरों में अमली तब्लीग़ भी कर रहे होते हैं। फिर कहते हैं तक़ारीर का मयार बहुत आला था। ये तक़ारीर हमें तालीम देने, एक उद्देश्य और एक सिम्त मुहय्या करने में बहुतमदद देने वाली थीं। ख़लीफ़-ए-वक़्त की तक़ारीर भी मैंने सुनी। क़ुरआन की आयात की रोशनी में आप ने तालीमात वर्णन कीं और कहते हैं मुझे एहसास है किस क़दर अब दुनिया को ज़रूरत है ख़ुदा तआला के पैग़ाम को समझने की और इस पैग़ाम को समझने के लिए किसी ऐसे शख़्स की ज़रूरत है जो मदद भी करे इस लीए जमात अहमदिया में जो ख़िलाफ़त का निज़ाम है वह एक ऐसा निज़ाम है जिससे दुनिया सबक़ हासिल कर सकती है।

कहते हैं एक और बात जो मैंने देखी वे अहमदियों का ख़ुदा तआला और अपने इमाम के साथ ग़ैरमामूली वफ़ा का ताल्लुक़ है।

सब इकट्ठे हैं, सब एक दूसरे के साथ एक वजूद की तरह हैं और अपने इमाम पर ज़्यादा एतेमाद करने वाले हैं कि वह हम को राह़-ए-रास्त दिखाने वाला है। कहते हैं अब यह जलसा देख के मेरा तो इरादा है कि अगर अल्लाह तआला ने मुझे तौफ़ीक़ दी तो हर साल जलसे में शामिल हूँगा क्योंकि यहां तीन दिनों में ख़ुदा तआला से ताल्लुक़ और इन्सानियत के मुताल्लिक़ बातें होती हैं इसलिए ज़रूरी है कि मैं भी ये बातें सीखूँ।

फिर अमरीका से एक मारूफ़ सीनीयर ला प्रोफ़ैसर हैं डाक्टर बरीट शारफस् (Brett Scharffs) उन्होंने जलसे में शिरकत की। कहते हैं यहां आकर इतना बड़ा मजमा देखकर मुझे बहुत ख़ुशी हुई है। और लोगों के दरमयान तआवुन का ख़ुसूसी वर्णन करते हुए कहते हैं कि मैंने दुनिया-भर में बहुत सी ऐसी तक़रीबात का ख़ुद भी इंतेज़ाम भी किया है जहां रजिस्ट्रेशन की कार्रवाई भी होती है लेकिन जलसा सालाना पर जिस मुनज़्ज़म तरीक़ पर रजिस्ट्रेशन के मुआमलात को चंद मिनट में तै किया जा रहा था एक हैरानकुन मंज़र था। मैं अभी यहां आकर दफ़्तर में बैठा ही था कि चंद मिनट लगे और हर चीज़ तैयार हो कर मुझे दे दी गई। फिर मुझे बताया गया कि आने वालों, मेहमानों की रजिस्ट्रेशन और दीगर ज़रूरी कार्रवाई पहले से हो जाती है ताकि मेहमान को कम से कम इंतेज़ार करना पड़े। रजिस्ट्रेशन के कारकुनान ने भी मा शा अल्लाह ख़ूब हक़ अदा किया। कहते हैं मेहमान-नवाज़ी बहुत अच्छी थी। इतनी ट्रैफ़िक होने के बावजूद वालंटियरज़ जिस तरह यकजहती से तआवुन करते हुए काम कर रहे थे नाक़ाबिल फ़रामोश तजुर्बा है। उद्देश्य कि जहां-जहां भी जिस कारकुन से भी वास्ता पड़ा हर एक की उन्होंने तारीफ़ है।

बेलीज़ (Belize) के एक शहर के मेयर आए हुए थे। कहते हैं कि मैंने अपनी ज़िंदगी में कभी इतने पुर अमन लोग नहीं देखे जो इतने प्यार करने वाले और पुरअमन हों। मैं यक़ीन नहीं कर सकता कि कुछ लोग इस्लाम को दहशत-गर्दी से तशबीया देते हैं। मैंने जो रुहानी माहौल यहां देखा है और लोगों का आपस में प्यार और मुहब्बत और हुस्न-ए-सुलूक वह यक़ीनन काबिल-ए-तारीफ़ है। कहते हैं में तो ख़ाहिश रखता हूँ अगले साल फिर जलसे पर आऊँ और एक मेयर की हैसियत से न आऊँ बल्कि एक वालंटियर की हैसियत से आऊँ, इतना इंसपायर (inspire) किया है वालंटियरज़ ने, काम करने वालों ने। और कहते हैं मैं भी ऐसी शानदार जलसे की इंतेज़ामिया का हिस्सा बनना चाहता हूँ। ऐसा अज़ीम जलसा मैंने कभी नहीं देखा। फिर कहते हैं यक़ीनन इस दुनिया का मुस्तक़बिल अहमदीयत है। अतः यह हक़ीक़ी इस्लाम है जो जमाअत पेश करती है जिस से ग़ैर प्रभावित होते हैं।

घाना के एक दोस्त हैं माईकल विल्सन। एक इदारा है कौंसल बराए साईंसी और सनअती तहक़ीक़ जो कि माहौलियाती साईंस और टैक्नोलोजी की वज़ारत के तहत है इसके चीफ़ टेकनालेजिस्ट के तौर पर काम करते हैं। उनको मुख़्तलिफ़ देशों में कान्फ्रैंसज़ में शामिल होने का अवसर मिलता रहता है। जलसे में शामिल हुए। जलसे से क़बल बातचीत के दौरान उन्होंने इंतेज़ामात को देखकर कहा कि जो कुछ मैं देख रहा हूँ, अब तक जो मैंने देखा है यह अल्लाह तआला के फ़ज़ल के बग़ैर कभी मुम्किन नहीं हो सकता। जुमा के रोज़ जलसा गाह पहुंचे तो बार-बार यह कहते रहे कि

यहां पर तमाम रज़ाकार उनकी commitment ने मुझे हैरान कर के रख दिया है। वाक़ई यह ख़ुदाई जमात है और ये तमाम काम बग़ैर अल्लाह तआला

के फ़ज़्ल के संभव नहीं हो सकता।

यहां पर बहुत ही डिसिप्लिन और प्यारा माहौल है। सब रज़ाकार पढ़े लिखे हैं। कुछ उनमें से कन्सलटैंट भी हैं लेकिन जलसे पर कारपेंटरी और सफ़ाई का काम कर रहे थे। अगर इन रज़ाकारों के दिलों में अल्लाह तआला का ख़ौफ़ न हो तो कभी ऐसा मयारी काम न हो सके। अतः ख़ुश-क़िस्मत हैं वह सब कार-कुनान जो इस तरह ख़ामोश तब्लीग़ कर रहे होते हैं।

फिर आलमी बैअत से बड़े प्रभावित हुए। कहते हैं मैं जलसे से पहले नहीं जानता था कि अहमदियत किया है लेकिन अब मैं जान गया हूँ और मुझे लगता है कि अब मैं हर साल आऊँगा। और फिर उन्होंने यह भी कहा है कि घाना जमाअत को तवज्जा दिलानी चाहिए कि घाना में जमाअत को मज़ीद परिचय करवाना चाहिए, अभी भी बहुत कमी है। फिर हेटी (Haiti) से मिस्टर यू एल टियूरन (Joel Turenne) जो वज़ारत मज़हबी उमूर हेटी के नुमाइंदे थे जलसा सालाना यूके में शामिल हुए। कहते हैं, मैं पहली दफ़ा जलसे में शरीक हुआ। मेरे लिए यह तजुर्बा बहुत ही प्रभावित करने वाला और खुश रहने वाला रहा। इंतेज़ामात बहुत ही अच्छे हैं। बावजूद चालीस हज़ार से ज़ायद अफ़राद के इजतेमा के किसी भी किस्म की बदनज़मी नज़र नहीं आई। हर शख़्स एक दूसरे के साथ मुस्कुराते हुए चेहरे के साथ मिल रहा था। हर एक इस कोशिश में नज़र आ रहा था कि मुझ से किसी को कोई तकलीफ़ न पहुंचे बल्कि हर शख़्स एक दूसरे के आराम का ख़्याल रख रहा था। यह बात मैंने और किसी मज़हब या दुनयवी इजतेमा में नहीं देखी और यही जलसे का एक उद्देश्य है जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने वर्णन फ़रमाया है।

(उद्धृत शहादतुल क़ुरआन, रुहानी ख़ज़ायन भाग 6 पृष्ठ 395)

कहते हैं कि बावजूद मुख़्तलिफ़ कल्चर, रंग-ओ-नसल के हर व्यक्ति एक दूसरे के साथ इस तरह मिल रहा था जैसे एक ही ख़ानदान के अफ़राद हों।

एक ही किस्म का खाना रोज़ाना मुख़्तलिफ़ अक़्वाम के लोग ऐसे खा रहे थे जैसे यह खाना इन सब का प्रिय खाना है। कहते हैं (तजस्सुस था उनको कि मैंने अफ़्रीक़ा से आए हुए एक मेहमान से पूछा कि क्या वजह है कि किसी भी मुआमले में कोई एतराज़ या तहफ़्फ़ुज़ात तुम लोगों के नहीं हैं तो इस अफ़्रीकन ने बताया कि यहां जलसे में हम सिर्फ़ अल्लाह की रज़ा की ख़ातिर और ख़लीफ़ा वक़्त को देखने सुनने और मुलाक़ात के लिए आते हैं इसलिए बाक़ी सब दुनियावी चीज़ें हमारे लिए कोई हैसियत नहीं रखतीं। कहते हैं इस चीज़ ने मुझे बहुत प्र-भावित किया। फिर जमाअत की उन्होंने तारीफ़ की है कि जमाअत बावजूद मुख़ालेफ़त के दुनिया में अमन फैलाने की कोशिश कर रही है। फिर कहते हैं कि अहमदियों के दरमयान किसी भी किस्म का इमतेयाज़ी सुलूक नहीं है। सब बराबर थे मैंने पहली दफ़ा यह देखा। समस्त वर्ग उम्र के अफ़राद रज़ाकाराना तौर पर मुख़्तलिफ़ ख़िदमात सरअंजाम दे रहे थे। ट्रैफ़िक कंट्रोल है। पार्किंग है। कैटरिंग है। वाटर स्पलाई है। नज़्म-ओ-ज़बत है। हर एक अपने ख़िदमत के जज़्बे से सरशार था। कहते हैं मैंने तो अहमदियों में बेशुमार ख़ूबियां देखी हैं जो आज तक मुझे कहीं और नज़र नहीं आईं।

कहते हैं मैंने बहुत से मज़हबी स्कालर्ज़ की तक़ारीर सुनी हैं और देखा है और हर कोई अपने ही बारे में कहता है कि मेरी बात सुनो लेकिन ख़लीफ़तुल मसीह ने तो अल्लाह और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बातें सुनी और कहा उनको सुनो और उनकी पैरवी करो।

कहते हैं ये बात मेरे लिए बड़ी हैरानकुन थी। तीनों दिन यह जलसा गाह में बैठ के तक़ारीर सुनते रहे बल्कि बहुत सारे अहमदियों से ज़्यादा तवज्जा से सुनें और तवज्जा इसलिए कि मुख़्तलिफ़ तक़रीरों के नोटिस लेते रहे हैं। अपनी डायरी बनाई थी, पूरे नोटिस लेते रहे उस पर और जहां कोई बात समझ नहीं आती थी वह साथ वाले से पूछते रहते थे कि इस का क्या मतलब है। कहते हैं कि बे-शक मैं अहमदी नहीं हूँ लेकिन इस जलसे में शिरकत के बाद अब मैं जमाअत अहमदिया का भी वकील हूँ और मैं जहां भी मुस्लमानों का वर्णन होगा बताऊँगा कि असल और बाअमल मुस्लमान अहमदी ही हैं और मैं आपका दिफ़ा करूँगा।

इसी तरह लुक़्मान हकीम सैफ़ुद्दीन साहिब हैं साबिक़ वज़ीर मज़हब इंडोने-शिया के। कहते हैं जलसे में शामिल हो कर बहुत फ़ख़र महसूस हुआ और आपका नारा "मुहब्बत सब के लिए नफ़रत किसी से नहीं जो है इस को मैंने लंदन एयरपोर्ट से देखना शुरू किया और जलसा गाह तक और जलसे के दिनों में यही कुछ देखता रहा। हर जगह आला मेहमान-नवाज़ी का मुज़ाहरा देखा। भाई चारे का बहुत मज़बूत रिश्ता देखा। हर तरफ़ एक दूसरे से मिलने, मुस्कु-राहटें बिखेरने, मुबारकबादें देने दुआएं बांटने का नज़ारा मैं देखता रहा। गेम्बया से जलसे में शामिल हुए वहां के मिनिस्टर आफ़ इन्फ़ार्मेशन लामीन ऐस आई जामे साहिब कहते हैं मैं सालाना 2023ए- के तमाम इंतिज़ामात से बहुत प्रभा-वित हुआ। इस से भी ज़्यादा हैरानकुन वो रज़ाकार थे जो बेलौस हो कर अपनी डयूटियाँ सरअंजाम दे रहे थे और नज़्म-ओ-ज़बत को क़ायम रखे हुए थे। इतना बड़ा इजतेमा और कोई एक भी वाक़िया देखने में नहीं आया जहां धक्का इत्याद हो रहा हो या कोई लड़ाई झगड़ा हो रहा हो और सारे इंतेज़ामात अहसन तरीक़े से किए गए। उनमें कोई रख़्ना नज़र नहीं आता था। कहते हैं एक और बात जो मैंने मुशाहिदा की वह अहबाब-ए-जमाअत का अपने इमाम से मुहब्बत का ताल्लुक़ है जिसकी और कहीं नज़ीर नहीं मिलती। कहते हैं मैं इस बात का एतराफ़ किए बग़ैर नहीं रह सकता हूँ।

आज समसस्त पृथ्वी पर हक़ीक़ी भाई चारे की जीती-जागती तस्वीर जमाअत अहमदिया में नज़र आती है जहां सब मुस्कुराते चेहरे के साथ बग़ैर रंग-ओ-नसल की तमीज़ के एक दूसरे के साथ ऐसे मिल रहे हैं जैसे सदियों से एक दूसरे के हूँ।

फिर जमात अहमदिया की गेम्बया में जो ख़िदमात हैं उनके बारे में उन्होंने लिखा कि हम बड़ी क़दर की निगाह से देखते हैं।

फिर गेम्बया से एबरेमा जी सन्कारे (Ebrima G. Sankarreh) हुकूमत के अनुवादक हैं। सदर-ए-मुम्लिकत के मुशीर बराए डॉयासपरा (diaspora) हैं। कहते हैं जलसा का जो सारा इंतेज़ाम था उस की सफ़लता की मुँह बोलती तस्वीर था। समस्त शामिल होने वालों का नज़्म-ओ-ज़बत, बाहमी प्रेम और मुहब्बत का जज़्बा काबिल-ए-दीद था। समस्त ख़िताबात और तक़ारीर मार्फ़त से परिपूर्ण थे। प्रवक्ताओं ने बाहमी मुहब्बत और पुरअमन मुआशरा क़ायम करने की तलक़ीन की। और फिर कहते हैं ख़लीफ़ा वक़्त ने जो आरंभिक और अंतिम ख़िताब में मुआशरे के कमतर और ग़रीब लोगों से हुस्न-ए-सुलूक करने की हिदायात दी इस से भी मैं बड़ा प्रभावित हुआ। कहते हैं ज़ाती तौर पर मुझे मुआशरे के मुख़्तलिफ़ तबक़ात के बूढ़े और नौजवान लोगों से मिलकर इस बात की उम्मीद ताज़ा हुई है (यह पर्सनल, ज़ाती तौर पर मिलते भी रहे हैं लोगों से कि आजकल की मुश्किलात के बावजूद दुनिया का मुस्तक़बिल रोशन है और ऐसे लोग मिले हैं जो दुनिया को तमाम बनीनौ इन्सान के लिए पुरअमन जगह बनाने के लिए कोशां हैं। कहते हैं मुझे यह निज़ाम देखकर भी हैरत हुई कि किस तरह जमाअत मुख़्तलिफ़ देशों से आए हुए चालीस हज़ार से अधिक मेहमानों की मेहमान-नवाज़ी कर रही है। हरफ़-ए-आख़िर यह कि नौजवान तबक़े का जोश और वलवला और रज़ाकाराना ख़िदमत का जज़्बा सबसे ज़्यादा प्रभावित करने वाला था।

इन के अनुशासन, अथार्टी की इज़्ज़त और बेलौस ख़िदमत ने मेरे ज़हन पर कभी न मिटने वाले नुक़ूश छोड़े हैं और दुनिया का मुस्तक़बिल रोशन है क्योंकि ऐसे नौजवान दुनिया को बेहतरीन जगह बनाने के लिए कोशां हैं। अतः हमारे नौजवानों का जो असर है यह भी इन ग़ैरों पर पड़ता है जो एक ख़ामोश तब्लीग़ है।

लूइस कार्लोस दा सिल्वा (Luiz Carlos da Silva) अख़बारी नुमाइंदा थे, पेट्रो पुलिस ब्राज़ील से आए थे। कहते हैं सब कुछ बहुत पसंद आया। एक सौ अठारह मुल्कों के लोगों का एक जगह भाई चारे के माहौल में इकट्ठा रहना किसी दूसरे के बस की बात नहीं। लोगों का आपस में इज़्ज़त, अख़लाक़ और ख़ुश-दिल्ली और हमदर्दी से मिलना मुझे तो बहुत अच्छा लगा। फिर उन्होंने जलसे के प्रोग्रामों की तारीफ़ की है। फिर मेहमानों के लिए ट्रांसपोर्ट के इंतेज़ा-मात का भी उन्होंने कहा है बड़ा अच्छा इंतेज़ाम था। कहते हैं ग़ैरमामूली बात थी। फिर कहते हैं कि एक बात मैं कहना चाहूँगा इतने बड़े जलसा में जिन हज़ारों लोगों को काम करते देखा उनमें किसी भी किस्म की बनावट नहीं थी। फिर वालंटियरज़ कि किस तरह बेलौस हो कर ख़िदमत कर रहे थे बल्कि सबको एक जोश और जज़्बे से काम करते देखा।

फिर स्पेन के वफ़्द में एक शामिल थे जो पेशे के लिहाज़ से तारीख़ दान हैं, वह आरकेवस्ट (Archivist) भी हैं और क़ुर्तुबा की अला नदलिस लाइब्रेरी में काम करते हैं। कहते हैं जलसा सालाना की दावत पर मैं आया हूँ बड़ा शुक्रगुज़ार हूँ। मैंने आपसे इस्लाम और इस्लामी कल्चर के मुताल्लिक़ बहुत कुछ सीखा है

और आप लोगों ने बड़ी मेहमान-नवाज़ी से रखा, बहुत इज़्ज़त दी। मैं कभी नहीं भुला सकता। मुख़्तलिफ़ मज़ाहिब और सक़ाफ़्त से ताल्लुक़ रखने वाले लोगों को इतनी बड़ी संख्या में एक साथ जमा होते पहले कभी नहीं देखा। यक़ीनन ये सब लोग अल्लाह तआला की मुहब्बत की ख़ातिर ही यहां जमा थे। कहते हैं जमाअत अहमदिया आज के दौर में वास्तव में अज़म और हिम्मत और जिद्-‌-ओ-जहद का एक आला नमूना क़ायम किए हुए है और इस नमूने को मैं रोज़ाना अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में अपने सामने रखूँगा। मेरे लिए भी यह सबक़ है।

इटली के एक सहाफ़ी आए हुए थे मारको रेस्पिनटी (Marco Respinti) एक अख़बार के चीफ़ ऐडीटर हैं। कहते हैं कि मैंने जलसे के बारे में पहले भी सुना और पढ़ा था परंतु इस में शिरकत बिल्कुल एक अलग किस्म का अनुभव है। मैं रज़ाकार उनके काम को देखकर बहुत प्रभावित हुआ हूँ। इस के साथ साथ एक और चीज़ जो देखने में आई वह बेहतरीन किस्म का नज़म-ओ-ज़बत था जो इतनी बड़ी तादाद को मद्-ए-नज़र रखते हुए बहुत मुश्किल काम है। कहते हैं इतने बड़े पैमाने पर नज़म-ओ-ज़बत और इस सफ़ाई का इंतेज़ाम कोई मामूली बात नहीं परंतु सबसे ज़्यादा अहम चीज़ जो मैं ने जलसा सालाना में देखी वह नमाज़ थी।

हर शख़्स के लिए नमाज़ एक ख़ास हैसियत की हामिल था। कहते हैं हालाँकि मैं मुस्लमान नहीं हूँ लेकिन मैं समझता हूँ कि जिस तरह अहमदी नमाज़ पढ़ते हैं ये हर इन्सान का सबसे पहला फ़र्ज़ है। मुझे वहां हज़ारों लोगों की लगन और संजीदगी को देखकर बहुत ख़ुशी हुई। कहते हैं सहाफ़ी होने के नाते में बहुत सारे लोगों को मिला। नए लोगों को, पुराने लोगों को, कई वाक़िफ़ भी मुझे मिल गए और फिर मुझे जमाअत अहमदिया की तारीख़ के बारे में भी बहुत कुछ पता लगा।

सेनेगाल के कोलडा रीजन के गवर्नर सेरानदो साहिब भी शामिल हुए। कहते हैं मैं जलसा में पहली शामिल हुआ। पूरी दयानतदारी से यह एक बात कह रहा हूँ कि जो नज़म-ओ-ज़बत मैंने जलसे पर देखा है वह आज से पहले कभी नहीं देखा। अहमदियों का ख़लीफ़तुल मसीह से ऐसा प्यार है जो शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता।

मैंने बतौर गवर्नर बहुत सफ़र किया है लेकिन ऐसे प्यार की नज़ीर कभी नहीं देखी। कहते हैं जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इक़्तेबास पढ़े वह भी मेरे दिल में घर कर गए हैं। मेरे दिल पर उनका बड़ा असर हुआ है। कहते हैं।

इस जलसे में जो ख़ास बात मैंने देखी है वह क़ुर्बानी का अनुभव है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जलसे के उद्देश्य में से एक यह भी उद्देश्य बताया था कि एक दूसरे की ख़ातिर क़ुर्बानी करो।

(उद्धृत शहादतुल क़ुरआन, ख़ज़ायन भाग 6 पृष्ठ 395) जो उन्होंने देखा। कहते हैं हर शख़्स दूसरे को अपने ऊपर तर्जीह देता है। कहते हैं मैंने विद्यार्थी होने समय में ख़िलाफ़त के बारे में सुना था लेकिन हक़ीक़ी और सच्ची ख़िलाफ़त का मुशाहिदा सिर्फ़ जमाअत अहमदिया में ही किया है। समस्त उम्मत मुस्लिमा अगर जमाअत अहमदिया की पैरवी करे तो यक़ीनन मुस्लमान कामयाब हो जाऐंगे

कोलंबिया के एक मेहमान थे, रोज़ो वेलेनिक (Rozo Valencia) साहिब कहते हैं मैं यहां का पुरअमन माहौल, भाई चारा, मुहब्बत, ख़लीफ़ा वक़्त के पुरमारेफ़ ख़ताबात और अफ़राद-ए-जमाअत को देखकर बहुत प्रभावित हुआ हूँ। जलसा सालाना में जो कुछ मैंने देखा इस से मुझे उम्मीद और हौसला मिलता है कि हमें यक़ीन करना चाहिए कि मुश्किल वक़्त के बावजूद हालात बेहतर हो सकते हैं। कहते हैं कि ख़ुदा हमारे साथ है। ख़लीफ़ा के पैग़ाम मेरी रूह तक पहुंचते हैं क्योंकि अमन एक इंतेहा बल्कि बेहतर ज़िंदगी का ज़रीया भी है। फिर रज़ाकारों की उन्होंने बड़ी तारीफ़ की है। हैरत-अंगेज़ इंतेज़ाम था। मेहमान--नवाज़ी हैरत-अंगेज़ तौर पर की। कहते हैं मुस्कुराहट हर जगह मुझे नज़र आई। कहते हैं जलसा सालाना की रज़ाकाराना ख़िदमात दुनिया के लिए एक नमूना और मतला श्यान ख़ुदा के लिए मुहब्बत का सबक़ है।

फिर अर्जनटाइन के यू.के में निर्धारित सफ़ीर जावेर फिगरोआ (Javier Figueroa) ने जलसे के पहले दिन शिरकत की। जलसे के इंतेज़ाम और माहौल से इस क़दर प्रभावित हुए कि उन्होंने बाद में अर्जनटाइन और आस--पास के लैटिन अमरीकन (Latin American) देशों के वफ़ूद जिन्हों ने जलसे में शिरकत की थी इन सबको बाक़ायदा एक तक़रीब के लिए अपने सिफ़ारत ख़ाने में दावत दी ताकि दूसरे देशों के सुफ़रा और उनके अपने सिफ़ारत ख़ाने में मुतय्यन डिप्लोमैट्स को भी जलसे के इनएक़ाद से मुतआरिफ़ कराया जाए। यह जमाअत की तालीमात और बिल्ख़सूस अमली किरदार से बहुत प्र-भावित हुए और ख़ुद ही इस ख़ाहिश का इज़्हार किया कि यह भरपूर मुआवनत के लिए तैयार हैं और बिल्ख़सूस सयासी वर्ग और डिप्लोमैट्स को भी जमाअत का तआरुफ़ करवाने की कोशिश करेंगे।

चेली (Chile) से तीन लोग आए हुए थे, यह एक ईसाई तंज़ीम के लोग हैं। उनमें से डाक्टर नेस्तर सोटो (Nestor Soto) ईसाई प्रीस्ट हैं, धर्मशास्त्री (Theologian) भी हैं। एक ईसाई तंज़ीम के चेली में संस्थापक हैं। कहते हैं।

जिस बात ने मुझे सबसे ज़्यादा प्रभावित किया है वह जमाअत का इत्तिहाद और आपसी मुहब्बत है।

कहने लगे में चालीस साल से दुनिया-भर में मुख़्तलिफ़ ईसाई तक़रीबात में शिरकत कर रहा हूँ लेकिन जमाअत अहमदिया के जलसे जैसी इस क़दर वसीअ तक़रीब और वह भी जो सिर्फ रज़ा काराना कारकुनान पर मुश्तमिल हो मैंने कहीं नहीं देखी। बड़े असर-ओ-रसूख़ वाले आदमी हैं। अमरीका के प्रैज़ीडैंट और अमरीका की हुकूमत के साथ भी उनके संपर्क हैं और वहां भी यह दुनिया के मज़हबी लोगों को इकट्ठा करके मज़हबी मीटिंगज़ आयोजित करवाते हैं।

उनके ख़्याल में हमारी जमात के जलसा की सफ़लता का राज़ हमारी यक-जहती है जो कि ख़लीफ़ा वक़्त के वजूद के ज़रीया से क़ायम है। (और ख़िलाफ़त भी अल्लाह तआला के फ़ज़ल से क़ायम है)। उन्हों ने कहा कि उनकी राय में ये एक चमत्कार ही है कि जमात के क़ियाम को एक सौ तीस वर्ष से अधिक अरसा हो चुका है और अभी तक हम में बड़े बाहमी तफ़रक़े और फ़िर्क़ा बाज़ीयां वक़ूअ में नहीं आएं। कहने लगे कि हमारे अवेंजलीकल (Evangelical) ईसाई तन्ज़ीमों और इसी प्रकार अन्य इस्लामी तन्ज़ीमों में सबसे बड़ी कमज़ोरी ही लीडरशिप के हुसूल के लिए बाहमी झगड़े और इख़तेलाफ़ात हैं। कहने लगे उसके बरअक्स आपके जलसे के इंतेज़ाम और तक़रीबात को देखकर मालूम होता है कि आपकी जमाअत एक जिस्म की तरह है। ख़लीफ़ा वक़्त इस जिस्म का सिर और दिमाग़ है और बाक़ी जमाअत एक जिस्म के अंग के मुतरादिफ़ हैं जो दिमाग़ के सिगनल और इशारे के तहत हरकत कर रहे हैं। अतः ख़िलाफ़त की इस एहमियत का अंदाज़ा ये ग़ैर भी हैं।

स्पेन से एक ज़ेर तब्लीग़ दोस्त एलोए पेरेज़ (Eloy Perez) साहिब कहते हैं इस जलसे में मेरे साथ बादशाह से बेहतर सुलूक किया गया। बहुत ख़्याल रखा गया। हर वक़्त घर का माहौल महसूस किया। जमाअत अहमदिया के रज़ाकारों का चालीस हज़ार से ज़्यादा लोगों की ख़िदमत करना एक चमत्कार है। तस्वीरी नुमाइशों में शिरकत के दौरान मैंने अहमदी कम्यूनिटी के बारे में बहुत कुछ सीखा। यह मुतहर्रिक और ज़िंदा तारीख़ का एक हिस्सा था। तक़रीब के दौरान मैंने भाई चारे के माहौल को महसूस किया। कहते हैं आपको मैं यक़ीन दिलाता हूँ कि मैं अल्लाह से जुड़ा हूँ हालाँकि में मुस्लमान नहीं हूँ लेकिन अल्लाह मुख़्तलिफ़ मज़ाहिब में मुश्तर्क है। निसंदेह अल्लाह आपके साथ और समस्त अहमदियों के साथ जलसे के दौरान नज़र आया और इतवार को अहमदी बिरादरी को अपने ईमान की तजदीद करते हुए देख कर मैं बहुत प्रभावित हुआ। उनमें से अक्सर जज़बात और ख़ुशी से रो रहे थे। मुझे वह तक़रीरें पसंद हैं जो की गई थीं जहां मैं अपने साथ वही मख़सूस पैग़ामात लेकर गया था जैसे हमदर्दी के बग़ैर मज़हब मज़हब नहीं है। जो मुस्लमान बनीनौ इन्सान पर रहम नहीं करता वह मुस्लमान या अल्लाह का पैरोकार नहीं है। मस्जिद में अमीर और ग़रीब में कोई फ़र्क़ नहीं है। मैं एतराफ़ करता हूँ कि जो चीज़ मुझे सबसे ज़्यादा पसंद आई वह (फिर मुझे लिखा है उन्होंने कि) आपसे ज़ाती तौर पर मिलना है और फिर उन्होंने ख़ाहिश ज़ाहिर की थी कि मेरी टी शर्ट पर दस्तख़त भी कर दें फिर दस्तख़त करवा के ले गए।

कैनेडा से Kyle Seeback एक मैंबर आफ़ पार्लीमैंट हैं। कहते हैं जलसा में आना मेरे लिए एक शानदार बात थी जहां अपने मज़हब के साथ वफ़ादारी और वालंटियराज़म का सबक़ मिलता है। फिर जो जमाअत अहमदिया पर ज़ुलम हो रहे हैं उसके बारे में कहा कि सब दुनिया को इस के ख़िलाफ़ खड़ा होना चाहिए और अहमदी बिरादरी की मदद करनी चाहिए, अहमदी वुकला की मदद करनी चाहिए। अहमदिया मसाजिद को मिस्मार किया जा रहा है इस बारे में हमें आवाज़ उठानी चाहिए। इस के बाद एक डायरी ले कर आए थे कि बातों

के नोटिस लूँगा लेकिन कहते हैं बातें सुनने में ही मैं इतना गुम हो गया कि मुझे नोटिस लेने याद नहीं रहे।

कैनेडा से एंड जिन्स क़ौम के वायस चीफ़ Aly Bear ख़ातून हैं ,कहती हैं ये मेरे लिए बहुत ख़ुशकुन बात थी कि मैं इस साल अपने कई और एंड जिन्स रा-हनुमाओं के साथ जलसे पर आई। मेरे लिए आलमी बैअत की तक़रीब बहुत जज़्बाती अवसर था। मैंने अपनी ज़िंदगी में कभी ऐसी तक़रीब नहीं देखी जो हर इन्सान को एक दूसरे के क़रीब कर देती है। सब लोग जज़्बाती थे और मैं भी जज़्बात से रो रही थी।

आलमी बैअत का तरीक़ हमारी इबादत से मिलता-जुलता है लेकिन मैंने अपनी इबादत में कभी ऐसी रूहानियत नहीं महसूस की थी जैसे मैंने आलमी बैअत के दौरान की थी।

मैं अपने साथ मुहब्बत और अमन का पैग़ाम लेकर वापस जा रही हूँ और कहती हैं अपनी क़ौम को आपका पैग़ाम "मुहब्बत सब के लिए नफ़रत किसी से नहीं" पहुंचाऊंगी और यहां आना मेरे लिए बड़ी क़ाबिल-ए-इज़्ज़त और काबुल--ए-फ़ख़र बात है।

हंडूरस (Honduras) से एक महिला टीवी एंकर कहती हैं कि मैंने ख़लीफ़ा वक़्त के ख़ताबात को ग़ौर से सुना, जलसे में शामिल हुआ, मुक़र्ररीन की तक़रीरें सुनी। मैं अपने आपको बड़ा ख़ुश-क़िस्मत समझती हूँ कि ऐसा अज़ीम अवसर मुझे मिला। बहुत सारे लोगों से मिलने का मुझे मौक़ा मिला और उनमें बेलौस ख़िदमात का जज़्बा देखा, आजिज़ी देखी। ऐसा मुनज़्ज़म इंतेज़ाम देखा कि मैंने आज तक कहीं नहीं देखा। जो मेरा लजना का ख़िताब था उसके बाद उन्होंने कहा कि हंडूरस में हम सबको ज़रूरत है। औरतों के हुक़ूक़ के बारे में कहा कि मैं अलग से एक वीडीयो भी इस बारे में बनाऊँगी ताकि लोगों को आसानी से बातें समझ भी आ जाएं।

तुर्की से प्रिंटिंग प्रैस के कुछ मालिक आए हुए थे। उन्होंने हमारी मुख़्तलिफ़ कुतुब और लिटरेचर प्रकाशित किए है। क़ुरआन-ए-करीम भी बड़ा ख़ूबसूरत वहां से शाय हुआ है, आपने बुक स्टॉल पर देखा ही होगा। ये प्रैस वाले मालिक आए हुए थे। उनके डायरेक्टर हैं : इतने बड़े इजतेमा को जिस ख़ुश-उस्लूबी से इतने ख़राब मौसम के होते हुए आप लोगों ने बग़ैर किसी मेजर प्राब्लम के आर्गेनाईज़ किया वह मेरे लिए बहुत हैरानकुन बात है। फिर ये कहते हैं एक चीज़ जो मैंने अजीब देखी (ये भी ग़ैरों पर-असर डालती है तब्लीग़ का है) कहते हैं इतने बड़े इजतेमा में मैंने किसी को सिगरेट पीते नहीं देखा और डयूटी पर मामूर कारकुनान की जिस तरह फ़रमांबर्दारी और मुनज़्ज़म तरीक़ पर लोग हुक्म मान रहे थे यह भी एक अजीब नज़ारा था कि छोटे छोटे बच्चों का, कार-कुनान का, लड़कों का ,नौजवानों का हुक्म लोग मान रहे थे।

एक और डायरेक्टर हैं दूसरी कंपनी के। कहते हैं कि मुझे जमाअत की इतनी वुसअत का अंदाज़ा नहीं था। कहते हैं नुमाइश के दौरान जब उन्होंने शुहदा की गैलरी देखी तो shock हुए कि इस ज़माने में भी इतनी बरबरीयत इस्लाम के नाम पर और वह भी एक मुस्लमान मुल्क में हो रही है। दोनों बाप बेटा आए हुए थे। कहते हैं कि हम बाव्जाह इंतेहाई अहम बिज़नस मीटिंग के जो जलसा सालाना के दौरान होनी थी तो हमारा आने का प्रोग्राम नहीं था लेकिन किसी वजह से मीटिंग कैंसल हो गई और हमारा जलसे पर आने का प्रोग्राम बन गया और यह हमारा ऐसा बड़ा अच्छा प्रोग्राम हुआ क्योंकि यह नाक़ाबिल-ए-फ़रा-मोश है।

लट्विया (Latvia) से जलसे पर आए एक सोशल वर्कर साहिबा लिखते हैं कि मैं जमात अहमदिया के बारे में ज़्यादा नहीं जानती थी लेकिन जलसे के दौरान मुझे इस्लाम अहमदियत के बारे में बहुत कुछ जानने को मिला। मैं वापिस जा कर क़ुरआन शरीफ़ का मुताला करूँगी और इस्लाम के बारे में अपने इलम को वसीअ करने की कोशिश करूँगी। जलसा सालाना का माहौल बड़ा पुरसुकून और पाकीज़ा था। हर चेहरे पर मुस्कुराहट थी। समस्त कारकुनों ने हमारा भरपूर ख़्याल रखा। कहती हैं जलसा सालाना की मेहमान-नवाज़ी और हुस्न-ए-सुलूक के बारे में तास्सुरात से मेरा दिल भरा हुआ है परंतु ज़बान वर्णन करने में असमर्थ है।

टीवी पर बैठे हुए जो लोग दुनिया में सुन रहे थे उनके भी तास्सुरात बाज़ों के आए हैं।

कांगो बराज़ावेल से हमारे मुबलिग़ ने लिखा है कि एक ईसाई दोस्त मिस्टर क्राइस्ट को जलसा में मदऊ किया गया। इख़्तेतामी ख़िताब सुनने के बाद कहने लगे कि अगर दुनिया की हर गर्वनमैंट इस तालीम पर अमल करे तो दुनिया से ग़ुर्बत अगर ख़त्म न भी हो तो कम से कम कोई शख़्स रात को भूखा नहीं सोएगा। कहते हैं जिस तरह ख़ुलफ़ाए इस्लाम को अपनी रियाया का ख़्याल था अगर हमारे लीडर इस तरह अपनी रियाया का ख़्याल करने लग जाएं तो हमारी दुनिया जन्नत बन जाए। कहते हैं यह तक़रीर सुन के मेरे दिल को बड़ा सुकून मिला है। कहते हैं कि जिस तरह हमारे ख़लीफ़ा ने इस्लाम की तालीम पेश की है दिल को सुकून मिल गया। फिर कहने लगे मैं ने हमारा ख़लीफ़ा के अलफ़ाज़ इसलिए इस्तिमाल किए हैं क्योंकि आज से मैं भी आपके साथ हूँ और ये मेरे भी खलीफ़ा हैं।

लट्विया से जलसा में शामिल होने वाली एक सोशल वर्कर ख़ातून Egija Uzane साहिबा कहती हैं जब से हम यहां आए हैं बड़े ख़ूबसूरत और पुरअमन माहौल में रह रहे हैं। हर चेहरा मुस्कुराता हुआ नज़र आता है। अजीब किस्म का पुरस्कून माहौल है। मुझे तो यह फ़िक्र हो रही है कि जब वापस अपने माहौल में जाऊँगी तो वही पुरानी हालत लौट आएगी जहां टेंशन का माहौल होता है और लोग एक दूसरे को घूर रहे होते हैं।

आईस से एक फ़ैमिली फ़ैडरेशन फ़ार वर्ल्ड पीस के मिशनरी पोल हरमन (Paul Herman) कहते हैं मेरा जलसा सालाना में शामिल होने का अनुभव शुरू से लेकर आख़िर तक बहुत उम्दा था। समस्त अफ़राद-ए-जमात जिन से मेरी मुलाक़ात हुई नर्म-दिल, शाइस्ता, दूसरों का ख़्याल रखने वाले, ख़िदमत के लिए हर-दम तैयार थे। रिहायश का बहुत उम्दा इंतेज़ाम था और ये सब कुछ तीन यादगार दिनों का अहम हिस्सा था और इतनी बड़ी संख्या की हाज़िरी को मद्द-ए-नज़र रखते हुए इंतेज़ाम बहुत आला था। फिर कहते हैं कि मेरे नज़दीक कारकुनान इस क़दर अनुभवी थे कि जितना भी उन पर प्रैशर पड़ता उन्होंने घबराना नहीं था। फिर कहते हैं जलसे में शामिल होने का तआवुन भी उम्दा इंतेज़ाम का हिस्सा था। मुझे यक़ीन है कि अफ़राद-ए-जमात के आला अख़लाक़ का अक्स है जो उन्होंने इतनी अच्छी तैयारी की है। यह सारा कुछ है और इस के इलावा ये लोग अपनी तालीम पर भी अमल कर रहे हैं। अतः यह असर जो है मेहमानों और मेज़बानों का जो दूसरों पर बड़ा पड़ता है। तक़ारीर के अनुवाद के बारे में कहा कि बाअज़ दफ़ा मुझे अनुवाद समझने में दिक़्क़त पेश आती थी लेकिन बहर हाल जो समझ सकता था मैंने बहुत enjoy किया।

हॉलैंड के एक वकील हैं उन्होंने भी इसी तरह अपने तास्सुरात का इज़हार किया है।

फिर प्योर इमानोल (Pierre Emmanuel) हेटी के जोडेशरी पुलिस के नुमाइंदा हैं। कहते हैं अहमदिया मुस्लिम जमाअत इंटरनैशनल के जलसा सालाना यू.के में शिरकत कर के इन मेहमानों में से एक होने का एज़ाज़ हासिल हुआ। एक ईसाई के तौर पर इस जलसे में शामिल हो कर मुझे न केवल इस्लाम बल्कि मज़हब के बारे में बहुत कुछ सीखने का अवसर मिला है। मुख़्तलिफ़ अक़ायद, सक़ाफ़्त, ज़बान और मंज़र से ताल्लुक़ रखने वाले लोग जिन के रस्म-ओ-रिवाज भी मुख़्तलिफ़ थे किस तरह एक ही रंग में रंगे हुए थे। यह अजीब नज़ारा था, यक़ीनन काबुल-ए-तहसीन और तक़लीद है।

कहते हैं मैंने जलसा में शमूलियत के बाद बहुत सोचा कि अगर अहमदियों के दिलों में जो वफ़ा-दारी और अपने मज़हब के अहकाम-ओ-फ़रायज़ का एहतेराम है क्या उनके दिलों में मुनाफ़क़त तो नहीं? तजस्सुस पैदा हुआ तो मेरे दिल ने कहा कि अहमदियों के दरमयान भाईयों जैसी हम-आहंगी लफ़्ज़ मुना-फ़क़त को गोया उनकी लुग़त से ख़त्म कर देती है। अतः य्ए तास्सुरात जो हैं हर अहमदी के लिए अपने ईमान की हिफ़ाज़त करने वाले भी होने चाहिएं। कहते हैं में जब अपने मुल्क वापस जाऊँगा तो मुहब्बत, अमन, एक दूसरे का एहसास, ईमान, इताअत और सिलारहमी का पैग़ाम लेकर जाऊँगा जो मुझे इन तीन नाक़ाबिल-ए-फ़रामोश दिनों में मिला है।

फिर एक नौमुबाईन हैं। से बिलाल कौदन साहिब। कहते हैं हमेशा यह एहसास मेरे साथ रहेगा। हैरत-अंगेज़ दिन थे और नज़्म-ओ-ज़बत का मुज़ाहरा और मुहब्बत और भाई चारा में कभी भुला नहीं सकता। कहते हैं आलमी बैअत में भी शामिल होना मेरे लिए एक नया अनुभव था। इसी से मेरी रूहानियत में इज़ाफ़ा हुआ और एक तसल्ली मिली।

आई लेंड से यूनुस साहिब शामिल हुए थे। कहते हैं जलसा में पहली दफ़ा दाख़िल हुआ तो मेरे दिल पर ऐसा ज़ोर पड़ा जैसे किसी ख़ास ताक़त का मेरे पर

नुज़ूल हुआ है। जलसे का नज़ारा देखकर मैं दंग रह गया। कहते हैं जलसे के बारे में सुना तो हुआ था। शामिल हो कर तो बिल्कुल एक और ही नज़ारा था।फिर जलसे का इंतेज़ाम सुनकर बैअतें भी हुईं।

गिनी बसाऊ में एक शख़्स ने जलसे का इंतेज़ाम देखकर बैअत की। तनज़ानिया से अमीर साहिब ने लिखा है कि वहां भी एम.टी.ए. पर शामिल हुए और बैअत की। मूसा साहिब की शादी 1970 ई. में ग़ैर अज़ जमात महिला से हुई थी और उनकी कोशिश थी, दुआ भी कर रहे थे कि पत्नी इस्लाम अहमदीयत क़बूल कर ले लेकिन ख़ातून नहीं मान रही थी। इस साल जलसे के दौरान वह फ़ैमिली एम.टी.ए. पर जलसा देख रही थी। उनकी अहलिया भी साथ देखने शामिल हुईं, आलमी बैअत में भी शामिल हुईं। आलमी बैअत के बाद उन्होंने कहा कि इस जलसा ने मुझ पर एक ख़ास किस्म का असर किया है और ख़लीफ़ के ख़ताबात ने मेरे अंदर एक अजीब सी तबदीली पैदा कर दी है। मैंने आलमी बैअत से पहले से फ़ैसला कर लिया था कि अब मैं अहमदियत में शामिल हो जाऊँगी इसलिए इस तरह जलसे की बरकात से उनकी अहलिया भी अहमदियत में शामिल हो गईं। इस तरह के बहुत से वाक़ियात हैं जो जलसे के बाद मौसूल हुए और अब भी मौसूल होते रहेंगे। जलसे की कार्रवाई सुनके जिन्हों ने बैअत की अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से जैसा कि मैंने कहा बेशुमार तबसरे हैं और इज़्हार-ए-ख़याल आए हैं। सबका वर्णन करना संभव नहीं है।

अल्लाह तआला करे कि इस जलसे के ऐसे नतायज हों जो अहमदियों की ज़िंदगियों को भी हमेशा के लिए अल्लाह तआला से जोड़ने वाले हों। उनके ईमान और ईक़ान में इज़ाफ़ा हो और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बेअसत के उद्देश्य को पूरा करने वाले हों।

और ग़ैरों पर भी ऐसे असरात हों जो सिर्फ वक़्ती न हों बल्कि मुस्तक़िल उनकी आँखें खोलने वाले हों और वे इस्लाम की तालीम को ही अपनी और दुनिया की निजात का ज़रीया समझने वाले हों।

मीडीया के ज़रीये से भी जलसे की कार्रवाई देखी और सुनी गई। जिससे इस मर्तबा भी काफ़ी वसीअ तौर पर परिचए हुआ। अफ़्रीक़ा के बर्र-ए-आज़म में चौबीस चैनल्ज़ ने तक़ारीर प्रोग्राम दिखाएंगे। मेरी तक़ारीर खासतौर पर सारी दिखाई। कई मुल्क इस में शामिल हैं और चालीस मिलियन से ज़ायद अफ़राद तक लोगों ने इस को सुना। सहाफ़ियों और मीडीया सैंटर तैयार किया गया था। उनमें तेईस मीडीया डायरैक्टर्ज़ और सहाफ़ी शामिल हुए और रोज़ाना की बुनियाद पर रिपोर्टस तैयार करते रहे। इस तरह कुल 72 न्यूज़ रिपोर्टस तैयार की गईं जो तक़रीबन पच्चास मिलियन लोगों तक पहुंचीं।

इकतालीस वैबसाईटस से ख़बरें नशर हुईं और उन वैबसाईटस को पढ़ने वालों की संख्या भी अनीस मिलियन बताई जाती है। जलसा के संबंध में अख़बारात में प्रकाशित होने वाले मज़ामीन की संख्या पंद्रह है। इन को पढ़ने वालों की संख्या भी पाँच मिलियन बताई जाती है। मुख़्तलिफ़ टीवी चैनल के हवाला से चौदह ख़बरें नशर हुईं। उन्हें देखने वालों की संख्या भी बीस मिलियन बताई जाती है। रेडीयो स्टेशनज़ पर सैंतीस (37) ख़बरें नशर हुईं। गुज़शता साल तेंतीस (33) थी इस साल सैंतीस (37) हुई और आठ मिलियन सुनने वालों की संख्या है और अपने ख़्यालात का इज़हार भी लोगों ने किया और बीस लाख लोगों तक पैग़ाम पहुंचा।

बेशुमार टीवी चैनल्ज़ हैं। इस में बी-बी सी वग़ैरा भी शामिल हैं। यू.के के बहुत सारे दूसरे न्यूज़ के चैनल्ज़ शामिल हैं। दुनिया के और बहुत से दूसरे मुल्कों के चैनल्ज़ शामिल हैं।

बहरहाल अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से जलसे की ख़बरें पहुंची हैं, जमात का परिचय हुआ, इस्लाम का परिचय हुआ और हर लिहाज़ से अल्लाह तआला ने इस जलसे को बाबरकत फ़रमाया

अल्लाह तआला हमें आजिज़ और शुक्रगुज़ार बंदा बनते हुए हमेशा अपनी इस्लाह करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाता रहे और हमेशा हम जमाअत से एक ख़ास और पुख़्ता ताल्लुक़ रखने वाले हों और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बिअसत के उद्देश्य को पूरा करने वाले हों।

★ ★ ★

पृष्ठ 02 का शेष

और यही सोच रखेंगे कि मेज़बानों की तरफ़ से या जलसे के इंतेज़ाम करने वालों की तरफ़ से अगर कोई कमी रह भी गई है तो हमें उसका कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। हमारा उद्देश्य तो अपनी रुहानी और इलमी हालतों को बेहतर करना है और वह हम जलसे की कार्रवाई और तक़ारीर से फ़ायदा उठा कर कर सकते हैं।

अतः पहली बात यह है कि हर आने वाला, जलसे में शामिल होने वाला इस बात को यक़ीनी बनाए कि हमने जलसे के औक़ात में इधर उधर फिरने की बजाय जलसे की मुकम्मल कार्रवाई सुननी है और जलसा के बाक़ायदा प्रोग्रामों के दरमयान जो वक़्फ़ा है, जो खाने और नमाज़ या दोस्तों से मिलने मिलाने के लिए भी होता है उसे भी बेहतर रंग में इस्तिमाल करना है। अगर इस में भी फ़ारिग़ वक़्त मिलता है तो सिर्फ बाज़ार में शॉपिंग के लिए ना फिरें बल्कि शोबा इशाअत की तरफ़ से यहां जमाअती कुतुब के बुक स्टॉल लगे हुए हैं उनमें जाएं। इसी तरह मुख़्तलिफ़ मर्कज़ी शोबाजात उदाहरणतः मख़्ज़न-ए-तसावीर है, रिव्यू आफ़ रिलीजंज़ है, तब्लीग़ इत्यादि की मारकी है, आरकाईवज़ की नुमाइश है उन्हें देखें और अपना दीनी और तारीख़ी इलम बढ़ाएं।

उद्देश्य कि हर लिहाज़ से पूर्णतः दुनियावी झमेलों से अलैहदा हो कर विशेषता दीनी और इलमी बेहतरी के सामान करने की कोशिश करें और जब यह होगा तो फिर आपस की मुहब्बत और ताल्लुक़ में भी इज़ाफ़ा होगा और इंतेज़ामिया और मेज़बानों में अगर इंतिज़ामात में कमज़ोरियाँ भी हैं तो नज़र नहीं आएंगी। ऐसा प्यारा माहौल होगा जो हक़ीक़ी मोमिनों के माहौल की तस्वीरकशी करता है। अगर यह नहीं तो हम जलसे में वह माहौल पैदा नहीं कर सकते जो जलसे का उद्देश्य है। कमज़ोरियाँ अगर तलाश करने लगीं और शिकवे करने लगें तो इतने बड़े और आरिज़ी इंतेज़ाम में दर्जनों शिकवे पैदा हो सकते हैं। परफेक्शन (perfection) तो नहीं हो सकती। बहुत सारी कमज़ोरियाँ नज़र आ सकती हैं जो तबीयत में बेचैनी पैदा करने वाली हों। उदाहरणतः खाना खिलाने का ही इंतेज़ाम है इस में उमूमन तो यही कोशिश की जाती है कि मेहमानों को हर मुम्किन सहूलत खाना खिलाने के लिए मुहय्या की जाए। सालन इत्यादि भी थोड़ा न हो और खाना देने वाले मुआवनीन भी मेहमानों की सही तौर पर आला अख़लाक़ दिखाते हुए ख़िदमत करें लेकिन कई दफ़ा अंदाज़े में कमी बेशी हो जाती है और सही तरह खाना मुहय्या नहीं हो सकता तो इस पर किसी भी किस्म के ग़ुस्से का इज़हार करने की बजाय ख़ुश-दिल्ली से कारकुनों की माज़रत क़बूल कर लेनी चाहिए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमारे सामने ऐसे हालात पेश आने पर किया उदाहरण प्रस्तुत किया इस बारे में आप अलैहिस्सलाम की सीरत में से एक वाक़िया बयान करता हूँ। इस तरह लिखा है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक दफ़ा सफ़र पर थे, काम में मसरूफ़ थे इसलिए आपने रात का खाना उस वक़्त नहीं खाया खाना serve किया जा रहा था और दूसरे मेहमानों को खिलाया जा रहा था। कारकुनों ने रख दिया होगा और बाद में थोड़ी देर बाद उठा भी लिया होगा बग़ैर देखे कि खाया है कि नहीं। इंतेज़ामिया ने भी इस तरफ़ तवज्जा नहीं दी कि आप अलैहिस्सलाम ने खाना नहीं खाया और अपने काम में आप हैं। बहरहाल रात गए आप अलैहिस्सलाम को जब भूख का एहसास हुआ तो आप खाने के बारे में पूछा तो सब इंतेज़ामिया के हाथ पैर फूल गए। सब बड़े परेशान हुए कि खाना तो जितने लोग वहां आए हुए थे और काम वाले थे सब खा चुके हैं और अब तो कुछ भी नहीं बचा। रात देर हो गई थी। बाज़ार भी बंद थे कि किसी होटल से ही मंगवा लिया जाता वह भी नहीं हो सकता था। बहरहाल किसी तरह हुज़ूर अलैहिस्सलाम को यह इलम हुआ कि खाना ख़त्म हो चुका है और इंतेज़ाम करने वाले परेशान हैं कि फ़ौरी तौर पर जल्दी जल्दी खाना पकाने का इंतेज़ाम हो। आप अलैहिस्सलाम ने इस पर फ़रमाया परेशान होने की ज़रूरत नहीं देखो! दस्तर ख़्वान पर कुछ बचे हुए रोटी के टुकड़े होंगे वही ले आओ। इसलिए आप अलैहिस्सलाम इन टुकड़ों में से ही थोड़ा सा खा लिया और इंतेज़ाम करने वालों की तसल्ली करवाई।

रिवायत करने वाले कहते हैं कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम अगर उस वक़्त खाना पकाने का हुक्म देते तो हमारे लिए बायस-ए-इज़्ज़त होता और हम इस बात पर

फ़ख़र महसूस करते कि ख़िदमत का अवसर मिला है और इस में बरकत थी लेकिन आप अलैहिस्सलाम ने हमारी तकलीफ़ का एहसास करते हुए रोक दिया कि कोई ज़रूरत नहीं है। (उद्धृत सीरत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अज़ याक़ूब अली इर्फ़ानी साहब रज़ियल्लाहु अन्हो, पृष्ठ 322 ऐडीशन 2016 ई.) अतः यह वह नमूना है जो हमें अपने सामने रखना चाहिए।

अगर निर्धारित वक़्त पर खाने के लिए नहीं पहुंचे तो फिर नख़रा भी कोई नहीं होना चाहिए। जो मिले उसे खा लेना चाहिए। कई दफ़ा सालन ख़त्म हो जाता है तो फ़ौरी तौर पर दाल पक्का ली जाती है क्योंकि वह आसानी से और जल्दी पक जाती है ताकि कोई मेहमान भूखा न रहे तो मेहमान को भी ख़ुश--दिली से उसे खा लेना चाहिए। इसी तरह यह सबक़ भी आप अलैहिस्सलाम ने दिया कि रोटी ज़ाए नहीं करनी चाहिए। आप अलैहिस्सलाम को पता था कि लोग रोटी के टुकड़े छोड़ जाते हैं इसलिए आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि वही ले आओ मैं खाऊँगा। अतः यहां भी मैं मेहमानों से यह कहूँगा कि रोटी पकाने वालों की तो पूरी कोशिश होती है कि रोटी अच्छी पके लेकिन कई दफ़ा शायद कहीं कच्ची रह जाए या जल जाए तो इंतेहाई सूरत में उसे छोड़ा जा सकता है लेकिन आम तौर पर नहीं। अगर कोई थोड़ी बहुत कमी बेशी रह गई हो तो फिर रोटी ज़ाए नहीं करनी चाहिए। रोटी प्लांट यहां चलता है, बड़ा वक़्त लगा के, बड़ी मेहनत से कारकुन काम कर रहे हैं और हर साल बेहतरी के लिए कोई न कोई नई improvement भी करते हैं।

यह बात मेहमानों को याद रखनी चाहिए कि यह खाना पकाने वाले और रोटी पकाने वाले कोई इस पेशे से मुंसलिक लोग नहीं हैं बल्कि वालंटियरज़ हैं और मुख़्तलिफ़ शोबा हाय ज़िंदगी से मुंसलिक हैं इसलिए जिस ख़ुलूस और जज़्बे से वह ख़िदमत कर रहे हैं इस को हमेशा सराहें।

आला अख़लाक़ का मुज़ाहरा करना ख़ुशअख़लाक़ी दिखाना, एक दूसरे से मुस्कुरा कर मिलना, दूसरे के लिए क़ुर्बानी का जज़्बा रखना सिर्फ़ कारकुनों का ही काम नहीं है बल्कि मेहमानों को भी विशेषता पर इस बात का ख़्याल रखना चाहिए

अगर अख़लाक़ नहीं तो कुछ भी नहीं। केवल कारकुनान की ख़ुशअख़लाक़ी से माहौल पुरअमन नहीं हो सकता बल्कि तमाम हाज़ेरीन को ख़ुशअख़लाक़ी का मुज़ाहरा करना चाहिए। औरतें भी इस बात का ख़्याल रखें और मर्द भी इस बात का ख़्याल रखें।

मैंने पिछली दफ़ा हदीस का हवाला दिया था कि मुस्कुराना भी ईमान का हिस्सा है। मुस्कुराते रहना भी सदक़ा है। (जामे अल् तिरमेज़ी, अबवाब अल् البر والصلة باب ما جاء فی صنائع المعروف, हदीस 1956) अतः इस बात का ख़्याल रखना चाहिए।

जलसे के हवाले से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने आला अख़लाक़ का मुज़ाहरा करने की जो तलक़ीन फ़रमाई है या मेहमानों के हवाले से जो तलक़ीन फ़रमाई है इस का मयार क्या है? फ़रमाया कि "मैं सच्च सच्च कहता हूँ कि इन्सान का ईमान हरगिज़ दरुस्त नहीं हो सकता जब तक अपने आराम पर अपने भाई का आराम जहां तक संभव हो मुक़द्दम न ठहरावे। अगर मेरा एक भाई मेरे सामने बावजूद अपने ज़ोफ़ और बीमारी के ज़मीन पर सोता है और मैं बावजूद अपनी सेहत और तंदरुस्ती के चारपाई पर क़बज़ा करता हूँ तो वह इस पर बैठ न जाए तो मेरी हालत पर अफ़सोस है अगर मैं न उठूँ और मुहब्बत और हमदर्दी की राह से अपनी चारपाई उसको न दूं और अपने लिए फर्श-ए-ज़मीन पसंद न करूँ। अगर मेरा भाई बीमार है और किसी दर्द से लाचार है तो मेरी हालत पर हैफ़ है अगर मैं उस के मुक़ाबिल पुरअम्न से सौता रहूं और उस के लिए जहां तक मेरे बस में है आराम असानी की तदबीर न करूँ और अगर कोई मेरा दीनी भाई अपनी नफ़सानियत से मुझ से कुछ सख़्त गोई करे तो मेरी हालत पर हैफ़ है।" जलसे के माहौल के लिए यह बात भी बड़ी ज़रूरी है। सख़्त गोई करे तो मेरी हालत पर हैफ़ है। "अगर मैं भी दीदा-ओ--दानिस्ता इस से सख़्ती से पेश आऊँ बल्कि मुझे चाहिए कि मैं उसकी बातों पर सब्र करूँ और अपनी नमाज़ों में उस के लिए रो-रो कर दुआ करूँ क्योंकि वह मेरा भाई है और रुहानी तौर पर बीमार है। अगर मेरा भाई सादा हो या कम इलम या सादगी से कोई ख़ता इस से सरज़द हो तो मुझे नहीं चाहिए कि मैं उस से ठट्ठा करूँ या चीं बरजबीं हो कर तेज़ी दिखाऊँ या बदनीयती से उस की ऐब गीरी करूँ कि यह सब हलाकत की हैं।

कोई सच्चा मोमिन नहीं हो सकता जब तक उस का दिल-ए-नर्म न हो जब तक वह अपने तईं प्रत्यक से ज़लील तर न समझे और सारी मशीख़तें दूर न हो जाएं। ख़ादिमुल क़ौम होना मख़दूम बनने की निशानी है और ग़रीबों से नरम हो कर और झुक कर बात करना मक़बूल इलाही होने की अलामत है और बदी का नेकी के साथ जवाब देना सआदत के आसार हैं और ग़ुस्सा को खा लेना और तल्ख़ बात को पी जाना निहायत दर्जा की जवाँमर्दी है।"

(शहादतुल क़ुरआन, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 6 पृष्ठ 395-396)

यह उमूमी हिदायत आप अलैहिस्सलाम ने अपने मानने वालों को दी। अतः यह वह बुनियादी अख़लाक़ हैं जिनका इज़हार हर वक़त भी और विशेषता जलसे के दिनों में बहुत ज़्यादा होना चाहिए। अगर हम इस पर इन तीन दिनों में अमल करेंगे तो कुछ न कुछ आदत इन बातों पर अमल करने की पड़ जाएगी और रोज़ाना ज़िंदगी में भी हम ये काम कर सकेंगे बशर्तिके यह ज़हन में हो कि मैं जलसे में अपनी रुहानी और अख़लाक़ी इस्लाह के लिए गया था। यह सोच ही मुस्तकेलन वह ख़ूबसूरत मुआशरा क़ायम करेगी जो दूसरे के हुक़ूक़ अदा करने की तरफ़ तवज्जा दिलाएगी कि मैं जलसे पर क्या सीखने गया था। अपने पर अपने भाई को तर्जीह देना कोई मामूली काम नहीं है। बहुत मुजाहिदे का काम है। इसलिए फ़रमाया कि इस का ताल्लुक़ ईमान से है। इसका ईमान ही दुरुस्त नहीं जिसमें क़ुर्बानी का और दूसरे का हक़ अदा करने का यह माद्दा नहीं। अल्लाह तआला बड़े इनामों का मुस्तहिक़ मामूली बातों पर नहीं बना देता बल्कि उसे ही बे-इंतिहा नवाज़ता है जो मुजाहिदे में बढ़ा हुआ हो। हुक़ूक़ुल ईबाद का अदा करना बहुत मुश्किल काम है इस लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक जगह फ़रमाते हैं कि हुक़ूक़ुल्लाह कई दफ़ा अदा हो जाते हैं लेकिन हुक़ूक़ुल ईबाद की अदायगी बहुत मुश्किल काम है।

(उद्धृत मल् फ़ूज़ात, भाग 8 पृष्ठ 19 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः हर एक को इस सोच को अपने सामने रखना चाहिए कि हमने अपने पर अपने भाई को तर्जीह देनी है। अगर यह सोच हम में से हर एक में पैदा हो जाए और इस सोच के साथ पैदा हो जाए कि मैंने दूसरे का हक़ भी अल्लाह तआला की रज़ा को हासिल करने के लिए अदा करना है तो ऐसा मुआशरा फिर प्यार और मुहब्बत का मुआशरा बन जाता है।

सिर्फ जलसे के तीन दिन ही इस प्यार-ओ-मुहब्बत के इज़हार के लिए नहीं होते बल्कि पूरी ज़िंदगी प्यारो मुहब्बत का नमूना बन जाती है। कैसी कैसी ख़ूबसूरत नसाएह आप अलैहिस्सलाम ने इस पाक मुआशरे के क़ियाम के लिए फ़रमाए हैं। फ़रमाया कि कोई सख़्त अलफ़ाज़ में बोले और मेरा व्यवहार भी वैसा ही हो तो मुझ पर अफ़सोस है।

चाहिए तो यह कि बजाय उस के कि मैं इस से सख़्ती से पेश आऊँ मैं इस के लिए दुआ करूँ। यह वह मुआशरा है जो इस्लाम क़ायम करना चाहता है और यह वह मुआशरा है जिसे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने मुरीदों में देखना चाहते हैं। यह कितनी ख़ूबसूरत बात आप ने बयान फ़रमाई कि जिसमें कुछ बुराईयां हैं तो वह रुहानी तौर पर बीमार है मेरा फ़र्ज़ है कि इस का ईलाज करूँ या करवाऊँ। अब यह बात सिर्फ दूसरे की इस्लाह के लिए नहीं है बल्कि अपनी इस्लाह के लिए भी है बल्कि दूसरे से बढ़कर अपनी इस्लाह के लिए है कि दूसरे की रुहानी बीमारी का ईलाज उसी वक़्त हो सकता है जब ख़ुद इन्सान इस बीमारी से पाक हो।

अतः उन बिमारीयों से बचने के लिए दूसरों के ऐब निकालने से बचना होगा। अपने दिल को दूसरों के लिए नरम करना होगा। हर किस्म का तकब्बुर अपने अंदर से निकालना होगा।

अतः इस पर मेज़बानों को भी ग़ौर करना चाहिए और जलसा सालाना मे शामिल होने वालों को भी बहुत ग़ौर करना चाहिए। अगर एक दूसरे की ग़लतियों को नज़र अंदाज करने और सलामती और हमदर्दी की फ़िज़ा पैदा करने की कोशिश करेंगे तो ये तीन दिन इस उद्देश्य को हासिल करने वाले बन जाऐंगे जिस के लिए हम यहां जमा हुए हैं।

बाअज़ दफ़ा मामूली बातों पर भी रंजिशें पैदा हो जाती हैं और ऐसा माहौल बन जाता है कि एक दूसरे को बुराभला कहने लगते हैं बल्कि हाथा पाई तक नौबत आजाती है। अगर यह माहौल पैदा करना है और जज़बात पर कंट्रोल नहीं रखना तो बेहतर है कि वह इन्सान जलसा पर न आए और इसी तरह डयूटी वाले अगर कंट्रोल नहीं कर सकते तो वह डयूटी न दें। ट्रैफ़िक के मुआमले में विशेषता शिकायात आती हैं। पार्किंग की महिदूद जगहें हैं। कारों की संख्या के लिहाज़ से पार्किंग दी जाती है इस दफ़ा शायद ज़्यादा कारें हों, तंगी भी हो। जब दूसरी जगह भेजा जाए तो तआवुन करते हुए हर मेहमान को चले जाना चाहिए। उमूमन तो अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से लोग तआवुन करते हैं ऐसी तर्बीयत है अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से जमाअत के अफ़राद की लेकिन कुछ ऐसी ग़ुस्सैली तबीयत के होते हैं या समझते हैं कि दूसरी जगह जाने से हमारा प्रोग्राम ज़ाए हो जाएगा हमें क्योंकि जलसा गाह में पहुंचने में देर हो जाएगी तो ऐसे लोगों को बहरहाल ख़्याल रखना चाहिए और इंतेज़ामिया की मजबूरियों को भी देखना चाहिए। अगर जलसे की उतनी ही पाबंदी है तो फिर वक़्त से पहले आया करें और डयूटी वाले जो हैं वह भी ऐसे लोगों से उलझने के बजाय प्यार से उन्हें समझाएँ। अल्लाह तआला करे कि आपस के सख़्त व्यवहारों की एक मिसाल भी हमारे सामने न आए। अल्लाह तआला मेहमानों को भी तौफ़ीक़ दे कि वह किसी भी शोबे के कारकुन को किसी भी किस्म के इबतेला में न डालें और कारकुनान के हौसले को भी अल्लाह बढ़ाए।

अल्लाह तआला करे कि ये तीन दिन सिर्फ हमारे तराने पढ़ने और नज़्में पढ़ने के और प्यार-ओ-मुहब्बत के गुण गाने के दिन न हों बल्कि इन तीन दिनों की तर्बीयत से वह जाग लगे जो मुआशरे में प्यार-ओ-मुहब्बत की एक ऐसी फ़िज़ा क़ायम करने वाली हो जो हक़ीक़ी और इस्लामी मुआशरे का गौरव है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बार-बार मुख़्तलिफ़ अवसरों पर हमें ऐसी पाकीज़ा सोचें रखने की तरफ़ तवज्जा दिलाई है जिस में सिर्फ नेकी और पाकीज़गी हो। एक अवसर पर मेहमानों को अपने फ़रायज़ की तरफ़ तवज्जा दिलाते हुए और पाकीज़ा सोच रखने की तरफ़ तवज्जा दिलाते हुए आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : "नेकी को महिज़ इस लिए करना चाहिए कि ख़ुदा तआला ख़ुश हो और इस की रज़ा हासिल हो और उस के हुक्म की तामील हो। इस बात पर ध्यान दिए बग़ैर कि इस पर सवाब हो या न हो। ईमान तब ही कामिल होता है जबकि यह वस्वसा और वहम दरमयान से उठ जाए।" अर्थात केवल यह ख़्याल न रहे कि मैंने जो काम करना है सिर्फ सवाब के लिए करना है। नहीं। बल्कि अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करने के लिए करना है। फ़रमाया "जबकि यह सच्च है कि ख़ुदा तआला किसी की नेकी को ज़ाए नहीं करता। إِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ (अल् तौबा : 120) "अल्लाह एहसान करने वालों का अज्र हरगिज़ ज़ाए नहीं करता। "परंतु नेकी करने वाले को अज्र मद्द-ए-नज़र नहीं रखना चाहिए। देखो अगर कोई मेहमान यहां महिज़ इस लिए आता है कि वहां आराम मिलेगा ठंडे शर्बत मिलेंगे या तकल्लुफ़ के खाने मिलेंगे तो वह गोया उन वस्तुओं के लिए आता है। हालाँकि ख़ुद मेज़बान का फ़र्ज़ होता है कि वह जहां तक संभव हो उनकी मेहमान-नवाज़ी में कोई कमी न करे और उसको आराम पहुँचावे और वह पहुँचाता है। लेकिन मेहमान का ख़ुद ऐसा ख़्याल करना उस के लिए नुक़्सान का कारण है।"

(मल् फ़ूज़ात, भाग 2 पृष्ठ 371-372 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः यह वह सोच है जिसको हर मेहमान को सामने रखना चाहिए। कुछ मेहमान जिनके अज़ीज़ यहां नहीं हैं जमाअती निज़ाम के तहत ठहरते हैं लेकिन कई दफ़ा रिहायश के लिए ऐसे मुतालिबात होते हैं जिनका पूरा करना मुश्किल होता है। इसी तरह कई और सहूलतें मुहय्या नहीं हो सकतीं क्योंकि जलसे के वसीअ इंतेज़ाम में ये सब सहूलतें मुहय्या करना मुम्किन नहीं। उमूमन लोग समझ भी जाते हैं। अभी दो दिन पहले की बात है मुझे एक ख़ानदान मिला जिनको बावजूद उसके कि उन्होंने काफ़ी अरसा पहले इंतेज़ामिया को इत्तिला दी हुई थी लेकिन किसी ग़लतफ़हमी की वजह से रिहायश का वह इंतेज़ाम नहीं हो सका जो वह चाहते थे तो उन्होंने अपना इंतेज़ाम किसी अज़ीज़ के हाँ कर लिया। जबकि प्रिय का घर भी बहुत छोटा है नीचे मीटर्सज़ (mattresses) बिछा के या बिस्तर बिछा के सौ जाएंगे और मेज़बान और मेहमान दोनों को दिक़्क़त का सामना भी करना पड़ा होगा लेकिन इस पर वह ख़ुश हैं कि जलसा तो सुन लेंगे और ये बातें उन्होंने बड़े हंसते हुए मेरे पूछने पर मुझे बताई। कोई शिकवा नहीं किया। अक्सर ऐसे ही मेहमान होते हैं लेकिन कुछ जब मुझे मिलते हैं तो उनके मिज़ाज को जानते हुए मुझे लगता है कि वह जमाअती रिहायशी इंतेज़ाम के तहत नहीं रह सकते लेकिन ख़ुशी से वे रहते हैं। बावजूद उसके कि मेरी सोच उनके उलट होती है और ख़्याल यही होता है कि शायद न रह सकें लेकिन वह ख़ुशी से रहते हैं और अक्सरीयत ऐसों की है लेकिन कुछ ऐसे भी होते हैं जिनको बहुत ज़्यादा शिकवा भी होता है।

अगर ख़ुश-दिली से अल्लाह तआला की रज़ा की ख़ातिर ये दिन गुज़ार लें तो अल्लाह तआला और रंग में नवाज़ देता है।

अब यहां भी जो उनकी रिहाइशगाहें थीं, टेंट थे या इजतेमाई क़ियामगाहें थीं मेरा ख़्याल है ज़्यादा लोगों की वजह से पूरी हो गई हैं। तो हो सकता है कि ऐसा इंतेज़ाम करना पड़े जहां दिक़्क़त हो तो इस इंतेज़ाम को भी मेहमानों को ख़ुशी से बर्दाश्त कर लेना चाहिए। बहरहाल मेज़बान का यह फ़र्ज़ है जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि जहां तक संभव हो मेहमान को आराम पहुंचाए और मेहमानों को भी अल्लाह तआला मामूली तकलीफ़ों को बर्दाश्त करने का बेहतरीन अज्र अता फ़रमाए। इस को भी उनको सामने रखना चाहिए और अल्लाह तआला से हासिल करने की कोशिश करनी चाहिए।

समाज में अमन और सलामती से रहने, अमन और सलामती की फ़िज़ा पैदा करने और अमन और सलामती फैलाने के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क्या नसीहत फ़रमाई। एक दफ़ा एक व्यक्ति आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ क्या हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! कौन सा इस्लाम सबसे बेहतर है? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जवाब दिया ज़रूरतमंदों को खाना खिलाओ और हर उस व्यक्ति को जिसे तुम जानते हो या नहीं जानते सलाम कहो। (सही अल् बुख़ारी, किताबुल् ईमान, बाब اطعام الطعام من الاسلام, हदीस 12) मुआशरे में मुहब्बत और भाईचारा पैदा करने और अमन-ओ-सलामती क़ायम करने के लिए ये वह ख़ूबसूरत उसूल है जिसे अगर अपना लिया जाए तो एक अमन और सलामती फैलाने वाला समाज क़ायम हो जाता है।

दुनिया में बहुत से फ़साद इसलिए हैं कि ग़रीब ग़रीब तर हो रहा है। आज भी करोड़ों लोग हैं जिनको दो वक़्त की रोटी भी नहीं मिलती। अगर रोटी खाएं तो रिहायश नहीं। ये जो अमीर मुल्क कहलाते हैं उनमें भी ऐसी बातें हैं यहां इस मुल्क में भी, यू.के में भी जिसे अमीर मुल्क कहा जाता है गो अब उनकी इमारत की वह हालत नहीं रही लेकिन बहुत सो से बेहतर हैं। हज़ारों लोग और बच्चे सड़कों पर पड़े हैं कि महंगाई की वजह से रोटी भी सही तरह मयस्सर नहीं और रिहायश भी मयस्सर नहीं। तो इस्लाम की यह बुनियादी तालीम है कि भूखे को खाना खिलाओ। काश कि मुस्लमान इस उसूल को समझें और उनके हुकमरान अपनी रियाया के हक़ अदा करने वाले बनें और सिर्फ अपने खज़ाने न भरते रहें बल्कि ग़रीबों और ज़रूरतमंदों की ज़रूरत पूरी कर के मुआशरे से बेचैनी और ज़ुलम को दूर करें। आजकल यह बेचैनी भी इसी वजह से बहुत सारी फैली है।

फिर फ़रमाया कि सलाम कहो। बहरहाल यह तो साथ मैंने बात की है। अपने मुआशरे में रिवाज देने के लिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सलाम की तलक़ीन फ़रमाई। सलाम कहना सिर्फ मुँह से बोल देना ही नहीं बल्कि जब इन्सान दिल से सलाम कहता है तो फिर सलामती पहुंचाने, फैलाने की सोच भी रखता है। एक दूसरे के लिए नेक जज़बात भी रखता है। उसकी तकलीफ़ों को दूर करने की कोशिश और दुआ भी करता है। अतः इन दिनों में हर अहमदी को यहां सलामती का पैग़ाम फैलाने, अस्सलामो अलैकुम को रिवाज देने और अपने अंदर एक दूसरे के लिए नेक जज़बात पैदा करने की कोशिश करनी चाहिए।

लोग उन लोगों से तो ख़ुश-दिली से मिल लेते हैं और बड़े तपाक से उन्हें

सलाम भी कर लेते हैं जिनसे उन्हें फ़ायदा पहुंच रहा हो या उनको भी ख़ुशी से मिल लेते हैं जिनसे आम ताल्लुक़ात हों लेकिन हक़ीक़ी अमन और सलामती उस वक़्त क़ायम होती है जब वे लोग जिनके दिलों में एक दूसरे के लिए रंजिशें हैं वे दौर हूँ और दिल से एक दूसरे के लिए सलामती की दुआ निकले।

अतः इस जलसे में ऐसे लोगों को भी रंजिशें दूर कर के सलामती का पैग़ाम पहुंचाने की कोशिश करनी चाहिए और उमूमी रंग में इस सारे माहौल में सलामती का पैग़ाम पहुंचाते ही रहना चाहिए। अल्लाह तआला इस पर अमल करने की भी हर एक को तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और ये सब जलसे का माहौल मुकम्मल तौर पुरअम्न और सलामती का माहौल बन जाए बल्कि आला अख़लाक़ और हुक़ूक़ुल-ईबाद की अदायगी हमारी ज़िंदगियों का मुस्तक़िल हिस्सा बन जाएं।

जलसे के इंतेज़ामात के लिहाज़ से कुछ उमूमी बातों की तरफ़ भी तवज्जा दिलानी चाहता हूँ जिनका हर एक को ख़्याल रखना चाहिए। पहली बात तो यह कि कोशिश करनी चाहिए कि जलसे की कार्रवाई ख़ामोशी और तवज्जा से सुनें और यह नहीं कि कुछ तक़रीरें सुनें और कुछ न सुनें। इस के बारे में पहले भी मैं कहा चुका हूँ कि जलसे में आ के बैठें। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस बात को सख़्ती से नापसंद फ़रमाया कि कुछ वक्ताओं की तक़रीरें सुन ली जाती हैं और उनकी शोला बयानियों को पसंद किया जाता है और कुछ को नहीं सुना जाता। (उद्धृत मल् फ़ूज़ात, भाग 1 पृष्ठ 398 से 401) वक्ता बड़ी मेहनत से तक़रीर तैयार कर रहे होते हैं। समस्त शामिल होने वालों को जलसे की तमाम कार्रवाई में शामिल हो कर रुहानी और इल्मी फ़ायदा उठाने की कोशिश करनी चाहिए।

फिर जल्से के दिनों में ज़िक्र-ए-इलाही और दुरूद शरीफ़ पढ़ने की तरफ़ भी ख़ास तवज्जा दें। आजकल तो वैसे भी मुहर्रम के दिन हैं और आज दस मुहर्रम भी है, इन दिनों में विशेषता दुरूद शरीफ़ पढ़ना चाहिए और इस सोच के साथ पढ़ना चाहिए कि अल्लाह तआला आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुक़ाम व मर्तबा को बुलंद करता चला जाए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पैग़ाम को सफ़लता और ग़लबा अता फ़रमाए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शरीयत को बक़ा और अज़्मत अता फ़रमाए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उम्मत के हक़ में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दुआओं से हम फ़ैज़ पाने वाले हों और अल्लाह तआला इस उम्मत को हर किस्म के बिगाड़ से पाक कर दे।

आज मुस्लमान अल्लाह तआला और उस के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के नाम पर क्या कुछ नहीं कर रहे। इस्लाम को बदनाम किया हुआ है उन्होंने। अल्लाह तआला उन्हें अक़्ल दे और ज़माने के इमाम अलैहिस्सलाम को मानने वाले भी हों। जुमे के दिन दुआएं क़बूल होती हैं। इस बात को दुआओं में याद रखें। अल्लाह तआला और उसके रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का नाम लेकर ही इन तथाकथित मुस्लमानों ने आज के दिन आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की रुहानी और जस्मानी ऑल पर ज़ुलम किया था। अब यही ज़ुलम आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की रुहानी ऑल और मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और उनकी जमाअत पर ये लोग कर रहे हैं।

पाकिस्तान में आजकल बहुत तकलीफ़ देने वाले हालात हैं। हर तरफ़ से मुख़ालेफ़ीन जमाअत को नुक़्सान पहुंचाने की कोशिश कर रहे हैं और कहते हैं कि हम हुब्ब-ए-रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम में ये कर रहे हैं और अहमदी नऊज़ूबिल्लाह (हम अल्लाह से पनाह माँगते हैं) आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तौहीन के मुर्तक़िब हो रहे हैं जबकि हमारे ईमान की तो बुनियाद ही आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ख़ातिमन् नबिय्यीन होना और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की लाई हुई शरीयत पर ईमान लाना है। असल में तो हम वे लोग हैं जिन्हों ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हुक्म पर लब्बैक कहते हुए आने वाले मसीह मौऊद और महदी माहूद को माना है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का इशक़ रसूल किस मयार पर था और इस वजह से अल्लाह तआला ने आप को किस तरह नवाज़ा इस बारे में आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं "एक मर्तबा ऐसा संयोग हुआ कि दुरूद शरीफ़ के पढ़ने में अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दुरूद भेजने में एक ज़माना तक मुझे बहुत इस्तिग़राक़ रहा क्योंकि मेरा यक़ीन था कि ख़ुदा तआला की राहें निहायत दक़ीक़ राहें हैं वह बजुज़ वसीला नबी करीम के मिल नहीं सकतीं जैसा कि ख़ुदा भी फ़रमाता है : وَابْتَغُوْٓا اِلَيْهِ الْوَسِيْلَةَ (अलमायद : 36) तब एक मुद्दत के बाद कशफ़ी हालत में मैंने देखा कि दो सिक्के अर्थात माशकी आए पानी ले के आने वाले"और एक अंदरूनी रास्ते से और एक बैरूनी राह से मेरे घर में दाख़िल हुए हैं और उनके काँधों पर-नूर की मुशकें हैं।" पानी नहीं बल्कि नूर की मुशकीं लिए हुए हैं"और कहते हैं هٰذَا بِمَا صَلَّيْتَ عَلٰى مُحَمَّدٍ"(हकीकतुल वह्यी, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 22 पृष्ठ 131 हाशिया) अर्थात ये सब इनाम नूर का इसलिए है कि तुम मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दुरूद भेज रहे हो।

तो यह आप अलैहिस्सलाम की इशक़ की हालत थी और इस तरह अल्लाह तआला ने आप अलैहिस्सलाम को नवाज़ा भी। अतः आप अलैहिस्सलाम ने बेशुमार जगह इस बात का इज़्हार फ़रमाया है कि मैंने जो कुछ पाया आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के वसीले से और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दुरुद भेजने से और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इशक़ में फ़ना होने से पाया। अतः मुझे तुम किस तरह हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से जुदा समझते हो। बहरहाल इन दिनों में अल्लाह की इबादत के साथ विशेषता दुरूद की तरफ़ भी बहुत तवज्जा रखें। अल्लाह तआला जलद तर इन बरकात को समस्त दुनिया में फैला दे जिनका वादा अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से किया है।

जलसा गाह में विशेषता महिलाएं इस बात का भी ख़्याल रखें कि कुछ समझ बूझ रखने वाले बच्चों को इस बात का एहसास दिलाएँ कि उन्होंने जलसे की कार्रवाई के दौरान ख़ामोशी से बैठना है। बचपन की तर्बीयत ही ज़हनों में रासिख़ होती है। जो औरतें बच्चों की मारकी में बैठती हैं वे भी कोशिश करें कि कम बोलें और कार्रवाई सुनने की तरफ़ तवज्जा दें। यह भी शिकायत आती है कि बच्चे कम शोर मचाते हैं। औरतें आपस में उनके बहाने से ज़्यादा बातें कर रही होती हैं तो इस तरफ़ तवज्जा देनी चाहिए।

इसी तरह सैक्योरिटी के लिहाज़ से भी मर्दाना और ज़नाना जलसा गाह में हर शामिल होने वाले को अपने माहौल पर नज़र रखनी चाहिए। यह बहुत बड़ा सैक्योरिटी का माध्यम है। और इसी तरह जो हिदायात आपके प्रोग्राम में लिखी गई हैं उन्हें भी ग़ौर से पढ़ें और उन पर अमल करें। अल्लाह तआला सबको जलसे से अहसन रंग में फ़ायदा उठाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। हर शर से बचाए और अपनी रहमतों और फ़ज़्लों की बारिश हम पर नाज़िल फ़रमाता रहे।

★ ★ ★

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web.www.alislam.org

www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553

Weekly **BADAR** *Qadian*

Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA

POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 08 Thursday 14 SEPTEMBER 2023 Issue No. 37

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमाअत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-करीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मलफ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुतबात जुमा और खिताबात, अध्यात्मपूर्ण संदेश, ख़ुतबा जुमा प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इलम के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर अमल करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की तालीम-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी तालीम-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इस का सम्मान किया जाए। इस लिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना मुम्किन न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे। संस्थान

★ ★ ★

128वां जलसा सालाना क़ादियान

29, 30, और 31 दिसम्बर 2023 ई. के आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 128वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए 29,30,31 दिसंबर 2023 ई. (दिन शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की तिथियों की मंज़ूरी प्रदान की है। जमाअत के लोग अभी से दुआओं के साथ इस मुबारक जलसे में शामिल होने की नियत करके तैयार आरंभ करदें। अल्लाह तआला हम सबको इस अल्लाह की खातिर आयोजित होने वाले इस जलसे से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और सईद रूहों के लिए हिदायत का माध्यम बनाए। इस जलसे के हर प्रकार से सफ़ल होने के लिए दुआएं करते रहें। आमीन।

(नाज़िर इस्लाह वा इरशाद क़ादियान)

★ ★ ★

महत्वपूर्ण सूचना

नूर हस्पताल क़ादियान में ऐक्सरे (X-Ray) टेक्नीशियन की ज़रूरत है

शर्तें

(1) प्रत्याशी की आयु 37 वर्ष से अधिक न हो (2) प्रत्याशी ने किसी सरकारी या रजिस्टर्ड विभाग से एक्स-रे टेक्नीशन का कोर्स किया हो और ऐसे कोर्स को Paramedical Council of Punjab मानता हो (3) डॉक्टर का निर्देश पढ़ने के लिए अंग्रेज़ी अच्छी पढ़ना जानता हो (4) अनुभव रखने वाले को प्राथमिकता दी जाएगी (5) सप्ताहिक अख़बार बदर में प्रकाशित आख़िरी सूचना के बाद 2 माह के अंदर जो निवेदन प्राप्त होंगे उन्हीं पर ग़ौर होगा (6) इच्छा रखने वाले प्रत्याशी अपने निवेदन प्रकाशित फ़ार्म पर अपने ज़िला अमीर स्थानीय अमीर/ सदर जमाअत/ मुबल्लिग़ इंचार्ज के हस्ताक्षर मोहर के साथ भिजवा सकते हैं (7) इंटरव्यू में सफ़लता की सूरत में उम्मीदवार को नूर हस्पताल क़ादियान से चिकतस्क जांच करवानी होगी और सिर्फ़ वही उम्मीदवार ख़िदमत के योग्य होगा जो नूर हस्पताल के तिब्बी बोर्ड की रिपोर्ट के मुताबिक़ सेहत मंद और तंदरुस्त होगा (8) स्लैक्शन की सूरत में प्रत्याशी को क़ादियान में अपनी रिहायश का इंतेज़ाम स्वयं करना होगा (9) सफ़र ख़र्च क़ादियान आने जाने और मैडीकल के समस्त अख़राजात प्रत्याशी के अपने ज़िम्मा होंगे (10) मज़कूरा असामी के लिए कोइ फ़ार्म नज़ारत दीवान से हासिल कर सकते हैं (11) प्रत्याशी जब इंटरव्यू के लिए तशरीफ़ लाएंगे तो अपनी असल तालीमी प्रामाणिकताएं अपने साथ ज़रूर लाएंगे

नोट:-लिखित परीक्षा साक्षात्कार की तिथि से प्रत्याशी उनको बाद में अवगत किया जाएगा

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें
नज़ारत दीवान सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान
पिन कोड143516-
मोबाइल:09646351280/09682587713
दफ़्तर 01872-501130
E-mail: diwan@qadian.in

Tahir Ahmad Zaheer
M.Sc. (Chemistry) B.Ed.
DIRECTOR
طالب دعا
Tahir Ahmad Zaheer
Director oxford N.T.T.College
Jaipur (Rajasthan)
TEACHER TRAINING

OXFORD N.T.T. COLLEGE
(Teacher Training)
(A unit of Oxford Group of Education)
Affialiated by A.I.I.C.C.E. New Delhi 110001
0141-2615111- 7357615111
oxfordnttcollege@gmail.com
Add. Fateh Tiba Adarsh Nagar, Jaipur-04
Reg. No. AIICCE-0289/Raj.

HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE

اب دیکھئے ہو کیا رجوعِ جہاں ہوا اک مرجع خواص یہی قادیاں ہوا
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE
(ہمارا عزم صاف ستھرا کاروبار) (SINCE 1964)
क़ादियान में घर, फ्लैट्स और बिल्डिंग उचित कीमत पर निर्माण करवाने के लिए सम्पर्क करें, इसी प्रकार क़ादियान में उचित कीमत पर बने बनाए नए और पुराने घर / फ्लैट्स और ज़मीन ख़रीदने और Renovation के लिए सम्पर्क करें
(PROP: TAHIR AHMAD ASIF)
contact no. : 87279-41071, 83603-14884, 75298-44681
e mail : hussainconstructionsqadian@gmail.com

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad